दीवाने शाही

सैयदी
यूनुस अल्गोहर

مصنف: سیّدی یونس الگوہر

रियाज़

मालिकुल मुल्क

दीवान ए शाही

मुसन्निफ़ : सैयदी यूनुस अल्गौहर

www.GoharShahi.com
www.YounusAlGohar.org

Compiled By
Mehdi Foundation International
First Edition 1000 Copies
2016

फेहरिस्त

पेज	क़सीदा	पेज	क़सीदा	पेज	क़सीदा
6	मेहदी फ़ाउंडेशन इंटरनेशनल का तआ़रूफ़	39	दिल रूबाई	75	मालिके रियाज़ुल जन्नाह
7	कलमा ए रियाज़ .... लाइलाह इल्ला रियाज़	40	फ़ेअ्ले खुदा	76	रोक दे धड़कन इस दिल की
8	रियाज़ दा कलमा	41	हुस्ने गौहर	77	गौहर तेरे लिए
9	गौहर गौहर पुकारूं	42	इश्क़े गौहर का फ़व्वारा	78	सोहबते यूनुस
10	आ दिलरूबा	43	गौहर बोले ख़ैर है	79	सूरते गौहर
11	अर्के ग़म	44	जलवा ए यार	80	ता नज़अ़
12	कलमा ए सबक़त	45	जुनूने मुहब्बत	81	तेरी हम्द
13	दिल	46	गौहर शाही शाफ़ी गौहर शाही काफ़ी	82	लुत्फ़े गौहर शाही
14	नज़रे करम	47	संगे जानां	83	अब्रे ज़ुल्फ़े यार
15	बातें अहमियत रखती हैं	48	नज़रे गौहर से जले है शमा	84	गौहर शाही
16	बुझ गया दिल	49	खुद में मुझ ही पाओ	85	प्रेम का भगती
17	मेर सरकार	50	रूहे बेक़रार	86	हस्ते रूह
18	मुहब्बत के मंदिर	51	रम्ज़े दिलबर	87	साडा चिड़ियां दा चमबह
19	देखो गौहर इश्क़ में	52	हुस्ने यूनुस	88	दुनिया
20	मन तालिब रियाज़ हस्तम	53	मुहब्बत हूँ	89	हुस्ने लाज़वाल
21	इक चाहत	54	यूँ ही बरसों	90	वो मुस्कुरा रहे हैं
22	मर्कज़े दिल	55	साहिबे मंज़िल	92	यादे गौहर
23	आतिशे इश्क़	56	शाहे इश्क़	93	गौहर ने ठानी है
24	गोशा नशीनी	57	मक़सद हमारा गौहर	94	मौजे नफ़्स
25	गौहर को राज़ी करना	58	मासिवा गौहर के सिजदा कुफ़्र है	95	Gohar Shahi is everywhere
26	गौहर कुल जग के इमाम	59 60	मस्त निगाहे रियाज़ की मय	96	How do I explain what do I think
27	गौहर लौट आओ	61	मेहदी का साथ	97	Mehdi in The Moon
28	गौहर मेहदी ईश्वर अल्लाह	62	दिलबरी	98	Halqa Jamal e Yaram
29	नामे गौहर से बढ़कर	63	मैं क्या चाहता हूं	99	हुस्ने मुजस्सिम
30	हजरॉ विच्चों	64	रियाज़ुल जन्ना के राजा	100	माशूक़े रूही रियाज़ दिलबर
31	हज्र अस्वद का फ़ैज़	65	मुश्के रियाज़	101	चश्मे राह
32	हलक़ा जमाले यारम	66	मिनजानिब जानेमन गौहर शाही	102	लैलाई के फसाने
33	नज़र	67	अज़मत मेरे गौहर की	103	ज़िक्रे ख़ास
34	दीद की बाज़ी	68	अज़ गौहर ग़ाफ़िल मुबाश	104	चेहरा ज़ुलजलाल
35	प्रीत	70	नामे गौहर है प्यारा	105	अशआ़र
36	तेरा नक़्श तुझको पुकारे है गौहर	71	पाए गौहर	107	ईमान बिल मेहदी
37	रब्बे आला रब्बे अकबर रा रियाज़ रब रियाज़	72-3	पास आते हैं		
38	चश्मे गौहर	74	तेरी याद		

मालिकुल मुल्क़ रियाज़ अहमद गौहर शाही इमाम मेहदी

हलफ़ नामा

इमाम मेहदी अल्मुंतज़िर रियाज़ अहमद गौहर शाही को गवाह बना कर हल्फ़ उठाता हूं कि सरकार गौहर शाही की तौफीक़ से दायमी तौर पर वफ़ादारे गौहर शाही रहूंगा।

सब से अफ़ज़ल हक़ गौहर शाही है, यही मेरी ज़िन्दगी का मक़सद है। हक़े गौहर शाही के इज़हार में किसी शख़्सियत, रिश्तेदार या अनानियते नफ़्स का लिहाज़ नहीं करूंगा। किसी के भी ज़ेरे असर आकर कभी भी हक़े गौहर शाही से मुंह नहीं मोड़ूंगा। किसी ख़ानदान, शख़्सियत, रिश्तेदार या नफ़्स की अनानियत को राहे गौहर में आड़े नहीं आने दूंगा। ग़ीबत, बुख़्ल, हिर्सो हसद, किब्रो इनाद और दीगर बातिनी उयूब का इलाज करूंगा। जब तक इन बीमारियों का इलाज नहीं हो जाता, इनको मिशन से दूर रखूंगा और किसी भी तौर इन बीमारियों की वजह से मिशन में रख़ना नहीं डालूंगा। यह मिशन सरकार गौहर शाही की रज़ा के लिए किया जा रहा है, इसलिए मैं भी महज़ रज़ाए गौहर शाही की ख़ातिर इस मिशन की बेलौस ख़िदमत करूंगा। मिशन में किसी क़िस्म की सियासत नहीं करूंगा। (अज़मते गौहर शाही और नामूसे गौहर शाही से मुतअ़ल्लिक़ा) मेहदी फ़ाउंडेशन इन्टरनेशनल के इग़राज़ो मक़ासिद से मुनहरिफ़ नहीं हूंगा। उस वक़्त तक मेहदी फ़ाउंडेशन से इस्तीफ़ा नहीं दूंगा जब तक मुझे यक़ीन ना हो जाए कि मेहदी फ़ाउंडेशन मालिकुल मुल्क रियाज़ अहमद गौहर शाही की ज़ात से जुदा हो गयी है।

तादम ए हयात मेहदी फ़ाउंडेशन की ख़िदमत करता रहूंगा, जब तक मेहदी फ़ाउंडेशन मालिकुल मुल्क रियाज़ अहमद गौहर शाही के मुफ़ादात की अमीन है। मेरा मालिको मौला बजुज़ गौहर शाही कोई नहीं, बस गौहर शाही की वफ़ा में ही साबित क़दम रहूंगा, इन्शाए गौहर। बजुज़ गौहर शाही किसी की भी ताज़ीम मेरे लिए शिर्क होगी। मेरा ईमानो अक़ीदा है कि सिवाए गौहर शाही कोई अ़बूदियत के लाएक़ नहीं है।

मेरा हर क़दम राहे गौहर शाही में उठेगा। मेरा सिर सिर्फ़ गौहर शाही के आगे ही झुकेगा। मैं किसी गुस्ताख़ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं रखूंगा ख़्वाह ऐसा शख़्स किसी भी मज़हब, घराने या ख़ानदान से मुताल्लिक़ा हो। हर मुसद्दिक़ा फ़रमाने गौहर शाही मेरे लिए क़ुरानो हदीस से अफ़ज़ल होगा। मैं दीने इलाही को अपनी ज़िन्दगी में ढालूंगा। दीने इलाही से अफ़ज़ल कोई कलाम नहीं, इस लिए इस की मौजूदगी में मुझे किसी और कलाम की ज़रूरत नहीं है। दीने इलाही की तर्वीजो इशाअ़त चांद, सूरज, हज्र अस्वद, प्रचारे मेहदी मेरी ज़िंदगी का अव्वलीन मक़सद है।

मेरी हिदायत, रहबरी और फ़ैज़ के लिए गौहर शाही और उन का नुमाइंदा काफ़ी हैं। नुमाइंदा, सैयदी यूनुस अल्गौहर को सरकार गौहर शाही ने खुद मुक़र्रर फ़रमाया है, लिहाज़ा हिदायत और नुमाइंदा दोनों मिन्जानिबे सरकार गौहर शाही हैं।

हर मुसीबत में बजुज़ गौहर शाही किसी को नहीं पुकारूंगा। गौहर शाही एक ही था, एक ही है और एक ही रहेगा। मेरे लिए वही गौहर शाही काफ़ी है जिसके हाथ में अपना हाथ मैं बरसों क़ब्ल दे चुका हूं। चूंकि दीने इलाही के मुताबिक़ गौहर शाही ने दोबारा अरज़ी अरवाह के ज़रिए यानी जिस्म समेत आना है, इस लिए मज़ार में कुछ नहीं है। ख़ाली इमारत को सिजदा करना शिर्क है, इस लिए मैं मज़ार को गौहर शाही से मुन्सलिक या मनसूब नहीं समझता। जो कोई इस नीयत से मज़ार पर जाए कि वहां गौहर शाही मौजूद हैं, मेरी नज़र में वो मुशरिक है, और मुशरिकों से मेरा कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होगा। मेरा ईमान व अ़क़ीदा है कि गौहर शाही मेरे हाल पर शाहिद हैं, वही मेरे लिए काफ़ी हैं। मेरे मालिक गौहर शाही जैसा कोई नहीं, जो सरकार गौहर शाही के इलावा किसी और के आगे झुके वो मरदूद है।

सरकार गौहर शाही इमाम मेहदी हैं और आप अपने वादे के मुताबिक़ बहुत जल्द दोबारह इस दुनिया में ज़ाहिर होंगे, मैं आप का मुन्तज़िर हूँ। जो मेरा रूख़ सरकार गौहर शाही से फेरने की कोशिश करे वो दज्जाल है। मेरा जीना, मेरा मरना, मेरी इबादत, मेरी पूजा फ़क़त सरकार गौहर शाही के लिए है। आप का इन्तेज़ार करना इस दौर की सबसे बड़ी इबादत है, इसके इलावा कोई हक़ नहीं।

मैं ऐसे किसी शख़्स से कोई मतलब नहीं रखूंगा जो मुझे सरकार गौहर शाही से दूर ले जाने की कोशिश करे। ऐसा शख़्स ज़ेहनी तौर पर मफ़लूज और बातिनी हक़ से महरूम है। मेरा जीना, मेरा मरना फ़क़त इमाम मेहदी गौहर शाही के लिए है। एतमामे हक़ गौहर शाही पर हो चुका है, और कोई नहीं आएगा। चूंकि इमाम मेहदी गौहर शाही का हक़ सबसे बुलंद और सबसे मुक़द्दम है, इसलिए इस हक़ की राह में बातिल कुव्वतें बरसरे पैकार हैं, और आये दिन कोई न कोई फ़ितना पैदा करती रहतीं हैं। लेकिन जिसके क़ुलूब में इस्मे रियाज़ या इस्मे गौहर कामिल हो चुका है उसका मुहाफ़िज़ गौहर शाही है।

सरकार का फ़रमान है कि जिस मज़हब में जो चीज़ हराम है उस मज़हब के लोगों पर वो चीज़ हराम है, सिवाए उन लोगों के जो ज़बीह हो जाएं। दोनों में से कोई एक चीज़ इश्क़ की भट्टी में जल जाए या तो क़ल्ब या रूह, अगर किसी का क़ल्ब या रूह इश्क़ की भट्टी में जल गए तो वो मुक़ामे ज़बीह पर पहुंच जाता है फिर उस पर उस मज़हब की पाबंदी नहीं रहती।

☆.....☆.....☆

(मेहदी फ़ाउंडेशन इंटरनेशनल)

मेहदी फ़ाउंडेशन इंटरनेशनल का तआरूफ़

☆.....☆.....☆

अज़मते गौहर शाही की अमीन
क़ल्बे गौहर शाही की मकीन
इश्क़े रियाज़ का साज़
ज़ुल्फ़े रियाज़ का नाज़
करना है हर एक को ज़ुल्फ़े गौहर का असीर
होजा गौहर का भिकारी कर ले दिल को अमीर
मेरा गौहर रब का पीर
मैं हूँ रांझा, गौहर हीर
गौहर इश्क़ का अमीर
बाक़ी सारे हैं फ़क़ीर
गौहर मेरा है दिलदार
मेरी रूह का सिंघार
भर ले इश्क़ का बहरूप
सोहना गौहर का है रूप
अदाए रियाज़ का अन्दाज़
सौते रियाज़ का गुदाज़
ये है क़ाफिलाए इश्क़े रियाज़
इस में शामिल है मन्शाए रियाज़
ये है परचारे मेहदी की तहरीक
इस को कहते है मेहदी फ़ाउंडेशन इंटरनेशनल

☆.....☆.....☆

(शारजा)
२००४

कलमा ए रियाज़ ..... ला इलाह इल्ला रियाज़

.....☆.....

ला मस्जूद इल्ला रियाज़ ..... **ला मअ़बूद इल्ला रियाज**
ला मौजूद इल्ला रियाज़ ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
रियाजुल जन्नाह जाने वालों! ..... विर्दे रियाज़ करो हरदम
मस्वे रियाज़ रहो हर दम ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
ईसा भी बोले रा रा रियाज़ ..... इदरीस भी बोले रा रा रियाज़
हम सब बोलें रा रा रियाज़ ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
चाँद में चमके रा रा रियाज़ ..... शम्स में चमके रा रा रियाज़
रूह में चमके रा रा रियाज़ ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
जो तू ने डाली नज़र नूर की ..... जब मेरे दिल पर
तो दिल में होने लगा ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
किसी ने पूछा कि ..... सबक़त का कलमा कौन सा है?
तो मेरे दिल ने कहा ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
कौनो मकां में हैं रा रियाज़ ..... जिस्म में जाँ में हैं रा रियाज़
तुझमें भी मुझमें भी हैं रा रियाज़ ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
मालिको ख़ालिक़ हैं रा रियाज़ ..... ज़ाहिर ओ बातिन हैं रा रियाज़
हामी ओ नासिर हैं रा रियाज़ ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
पूछा सब ने क्या है नाज़ ..... दिल से गूंज उठी ये आवाज़
तू है मेरा मालिक रियाज़ ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
बन जाऊँ मैं ऐसा साज़ ..... हर दम बोले रा रा रियाज़
गूंजे मन से ये आवाज़ ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
होश भी हो मदहोशी भी ..... बात भी हो, ख़ामोशी भी
जिधर देखूं, उधर हो रा रियाज़ ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
पूजूं तुझे और चूमूं तुझे ..... तुझ से मैं राज़ो नियाज़ करूं
हर दम रियाज़, रियाज़ करूं ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**
क़ल्बे यूनुस का सुख और चैन ..... रियाज़ हबीबी नूरुल ऐन
रियाज़ हबीबी नूरुल ऐन ..... **ला इलाह इल्ला रियाज़**

☆.....☆.....☆

(लंदन)

रियाज़ दा कलमा

.....☆.....

असां रियाज़ दा कलमा पढ़ना ए,
ते रियाज़ नूं सजदा करना ए
जेनूं नसनां ए ओ नस जावे,
असां रियाज़ दे नां ते मरना ए
रब रियाज़ गौहर दे नाल असां
कुझ क़ौल क़रार वी कीते नें
गौहर दे नारे लानें नें,
हाले इश्क़ दा रोला पाना ए
रियाज़ुल जन्नाह गौहर दा घरां,
जिथे सारे अल्लाह चाकर नें
रब रियाज़ ही दीने इलाही ए,
अल्लाह वी रा रा करना ए
असां दुनिया नूं समझाना ए,
गौहर दा रंग चढ़ाना ए
मेहदी दा नारा लाना ए,
दज्जाल दा कम वी पाना ए
यूनुस तू कमला झल्ला एं,
हर वेले होके भरना एं
असां शाही तख़्त विछाना ए,
तू एवें मरना चाहनां एं

☆.....☆.....☆

१८ अक्तूबर २००४
(लंदन)

गौहर गौहर पुकारूँ

(इज़ाफी क़सीदा)

.....☆.....

गौहर गौहर पुकारूं मैं मौला ..... मुझ से गौहर को राज़ी तू कर दे
छीन ले ऐसी नेअमत खुदारा ..... जो मुझे दूर गौहर से कर दे
इल्तिजा सुन ले टूटे दिलों की ..... आह सुन ले तु इन बे कसों की
तू ही सुनता है इन दिल जलों की ..... तू ही आशा है इन बेबसों की
दर पे आया है गौहर सवाली ..... लौट कर यह ना जाएगा ख़ाली
तू ही दाता है गौहर तू ही वाली ..... बस तेरी हर अ़ता है निराली
नाम तेरा ही निकला जुबां से ..... ऐ गौहर जब भी गोया हुए हम
तुझ को देखा तो तेरे हुए हम ..... वासते तेरे पैदा हुए हम
ज़ीस्त है तेरी नज़रों में रहना ..... मौत है तेरी नज़रों से गिरना
क़हर है तेरी नज़रों का हटना ..... है नज़र तेरी नज़रों से चलना
है मुहब्बत इन आँखों का बहना ..... ज़ख़्म खाकर किसी से न कहना
चुपके चुपके हर इक जुल्म सहना ..... जां भी दे कर वफ़ादार रहना
तू ही कह दे क्या तेरा नहीं मैं ..... क्या गौहर तुझ पे शैदा नहीं मैं
क्या आस पर तेरी जिन्दा नहीं मैं ..... क्या गौहर तेरा बंदा नहीं मैं
जुल्म ज़ालिम की ठहरी विरासत ..... मेरे दिल की दुआ है मुहब्बत
हुब्बे गौहर मिले ऐसी क़िस्मत ..... गौहर वालों के दिल की है दौलत
एहतराज़ ए वफ़ा है ये नफ़रत ..... मुब्तिलाए जफ़ा है ये फ़ितरत
इश्क़े गौहर गौहर की है सितवत ..... क़ल्ब ए माशूक़ की न्यारी नुसरत
ऐसी शरीयत से क्या फैज़ होगा ..... जिसमें महके न खुशबूए गौहर
वो तरीक़त कहां है तरीक़त ..... जिसमें शामिल नहीं रंगे गौहर
है हक़ीक़त वही बस हक़ीक़त ..... जिस में झल्के तेरा अ़क्स गौहर
मारफ़त है तेरी मुस्कुराहट ..... रूत्बा क्या है बजुज़ नज़रे गौहर
यूनुसे सोख़ता का है नारा ..... दिल है तेरी मुहब्बत में हारा
तेरे अफ़कार से दिल हुआ न्यारा ..... तेरी उल्फ़त का बहता हुआ धारा

☆.....☆.....☆

१९९७

(मान्चेस्टर)

आ दिलरूबा

.....☆.....

आ दिलरूबा दिल में आ,
सुन ज़रा टूटे दिल का फुग़ां
कुछ नहीं बिन तेरे तू ही है मेरे दिल की ज़ुबां
मेरे छोटे से दिल में अगर आए जोबन तेरा
मेरा दिल तेरे जल्वे से हो जाए तेरा मकां
तेरा चेहरा अगर मुस्कुराता रहे
मेरे दिल को यही बस लुभाता रहे
तेरे जलवों में खो जाऊं मैं इस तरह
ढूँडता मुझ को रह जाए ये जहां
ऐसी वारफ़्तगी कीजिए मुझ को अ़ता
तेरे क़दमों में मिट जाए नामओ निशां
तेरे चेहरे की लाली मेरी ज़िंदगी
महरूख़ के सिवा गौहरी ज़िन्दगी
मुझ को मिलती कहां

१७ अक्तूबर २००४
(लंदन)

अर्क़े ग़म

.....☆.....

आ तो जाएगा वो आते आते ..... दिल को भाएगा वो भाते भाते

नफ़रतें उस से भी लड़ती होंगी ..... थक ही जाएगा वो जाते जाते

उसने सीखी है नफ़रतों से मुहब्बत ..... नग़मा बन जाएगा गाते गाते

दर्द और ज़ख़्म का रखता है भरम ..... मर ही जाएगा मरते मरते

लम्स ज़ख़्मी है, मसीहाई कहां? ..... मरहम बन जाएगा रखते रखते

उन की आँखों में झरना ए दर्द दिखे ..... बह ही जाएगा बहते बहते

शम्सो क़मर से दोस्ती उस से निभी है ..... ढल ही जाएगा ढलते ढलते

धूप और किनारे उस से खफ़ा रहें ..... जल ही जाएगा जलते जलते

ए नाज़नीन ए जाने अलम, ग़म हो सलामत

सिलसिला दर्द का चलता जाएगा चलते चलते

आँखों से पिलाई तो तोहमते इश्क़ मिलेगी

बातों से ही हो जाएगा नशा होते होते

अंदाज़े गुफ़तगू से फ़रेबे नज़र जो भा ली हो

मुनक़ता सिलसिलाए इलहाम हो जाएगा होते होते

यूनुस नहीं गोया हो अर्क़ ए ग़म ..... सहता जाएगा सहते सहते

☆.....☆.....☆

२० जून २००६

(लंदन)

कलमाए सबक़त

☆.....☆.....☆

अब गौहर ही फ़ैसला करेगा इस हक़ीक़त का
कलमा ए असल जो फैल रहा है सबक़त का
शम्सो क़मर में सूरत ए गौहर है नुमायां
अब देना ही होगा जवाब इस चाहत का
तूफ़ान ए इश्क़ ही फ़ैसला करेगा शमा ए क़ल्ब का
शमा वो जलेगी जिस में दम होगा मुसीबत का
आओ.... चलो संग संग मेरे ऐ दोस्तों!
गर क़ल्ब में जमा है पहाड़ हिम्मत का
बुझ चुके है चिराग़ ए मुहम्मदी व मूसवी
जगमगा रहा है फ़ानूस ए इश्क़ गौहरियत का
नफ़रत उबल पड़ी है मानिन्द तअ़फ़्फ़ुन
अब असर हो रहा है वन्नास पे मुहब्बत का
यूनुस हमें परवाहे नशेमन भला क्यों
जब रा रियाज़ साया है मददो नुसरत का

१८ अक्तूबर २००४

(लंदन। सुबह 3:34 पर)

दिल

☆.....☆.....☆

अर्सा हुआ हवास से आ़री है मेरा दिल
बे ताबियों से पुर, ज़ख़्म कारी है मेरा दिल
जो ज़िन्दगी अज़ीज़ थी लगती है अब घुटन
अब ज़िन्दगी की नअ़श पे भारी है मेरा दिल
बिस्तर की सिल्वटें तो है कमख़्वाबी की दलील
किस नींद की तलाश में जारी है मेरा दिल
ख़ामोशियों की नग़मा सराई में कैफ़ है
हलचल में अब सकूत की तारी है मेरा दिल
खुद फ़रामोशी और खुद बेगानगी दिल से मिली मुझे
इम्कान से दूर, इश्क़ हौवारी है मेरा दिल
जुल्फ ए गौहर ने ढांप लिया शोखिए दिल को
अब फ़ितरतए लतीफ़ खुमारी है मेरा दिल
दिल के कुमार ख़ाने में क़ल्लाश हो गया
इक इश्क़ की बाज़ी का जुआरी है मेरा दिल
इन्सान सरापा हूँ पै इन्साने गुमां हूँ
अब फ़ितरते इन्सां से बेज़ारी है मेरा दिल
हुस्ने गौहर सरमायाए दिल कब का हुआ
अब जल्वाए गौहर का भिकारी है मेरा दिल
इन्सान से तअल्लुक़ह रखने नहीं देता
नज़रे गौहर से इश्क़ सवारी है मेरा दिल
हुस्नू गौहर गुलाब और इश्के़ गौहर शजर
इन दो के बीच एक क्यारी है मेरा दिल
रखता है बुग्ज़ इश्क़ के दुश्मन से यूं गोया
तलवार इश्क़ और जफ़ा कारी है मेरा दिल
अन्दाज़ा दर्दे दिल अन्दोह न कीजिओ
जुल्फ़े वफ़ाए रियाज़ का हारी है मेरा दिल
गौहर बिना गौहर भला किस तरह आए है
पस यक वजूदे जां गौहर दारी है मेरा दिल
दिल दिल नहीं पै दिल है दिल दिल दलील है
यक जुम्बिशे रियाज़ जां वारी है मेरा दिल
दिल, दिल नशीं के जल्वाए महताब से रंगी
नक़्शे लबे माशूक़ निगारी है मेरा दिल
यूनुस दिले बेचैन को ले कर कहां जाऊं
हर लम्हा यूँ लगता है कि बस हौवारी है मेरा दिल

☆.....☆.....☆

२१ दिसम्बर २००३ (मुम्बई, हिन्दुस्तान)

नज़रे करम

.....☆.....

ऐ गौहर अक़्ल से तो मैं बेज़ार हूँ
इश्क़ की अब तेरे मैं तलबगार हूँ
ऐ गौहर तेरी नज़रे करम चाहिए
ग़म बला और मुसीबत से मैं ख़्वार हूँ
मुझपे नज़रे करम हो ख़ताकार हूँ
ऐ गौहर तेरी नज़रे करम चाहिए
तेरी निस्बत मिली, तेरी उल्फ़त मिली
तेरी रंगत मिली, तेरी संगत मिली
ऐ गौहर तेरी नज़रे करम चाहिए
तेरी नज़रों में अब आ गई हूँ गौहर
तेरी बाहों में अब आ गिरी हूँ गौहर
ऐ गौहर तेरी नज़रे करम चाहिए
मुझ को रंजो अलम अब सताने लगे
वसवसे मेरे दिल में समाने लगे
ऐ गौहर तेरी नज़रे करम चाहिए
जाल शैतान अपना बिछाने लगा
रस्मे दुनिया में मुझ को फंसाने लगा
ऐ गौहर तेरी नज़रे करम चाहिए
तुझ को दुनिया में क्या चाहिए
बस गौहर तेरी नज़रे करम चाहिए

☆.....☆.....☆

यकम जनवरी २००५
(लंदन)

बातें अहमियत रखती हैं

.....☆.....

मैं कहता हूँ इन की बातें ... मुंह से मेरे निकलती हैं
कहने वाले को तुम छोड़ो ... बातें अहमियत रखती है

गर हो बातों से नूर बरामद ... सीधी दिल में उतरती है
इन बातों से गौहर वालों की ... तक़दीरें बदलती है

मेरा मक़सद हुब्बे गौहर है ... दिल में तुम्हारे आ जाए
इसी बहाने ज़िन्दा हूँ ... इस आस पे सांस चलती हैं

क्यूँ बदज़न हो मुझ से लोगों ... मैं तो एक परिंदा हूँ
यादे गौहर पर रवां दवां हूँ ... मेरी अपनी क्या हस्ती है

फ़ितरत से मजबूर हैं हम ... वरना लहरें कभी तुग़यानी में डूबतीं हैं
एक है वादा सदियों पहले दिल्बर ने इस दिल से लिया
वादा वफ़ा हो जाए

तुम से गिला क्यूँ होगा, हम को क्या कोई उम्मीद भी थी
आँखों की अपनी मरज़ी है जानें क्यूँ ये रोती हैं

☆.....☆.....☆

६ अक्तूबर २००७

(लंदन)

बुझ गया दिल

.....☆.....

बुझ गया दिल जो तेरी याद में ज़िन्दा था कभी
ढल गया ख़्वाब जो ताबीर ए शरमिन्दा था कभी
घोंसला खाली हुआ और चहक मअ़दूम हुई
अब यह परवाज़ से आ़री है परिंदा था कभी
रंज से रंग हुआ फ़क़ कि हवादिस बिखरे
नाला ए नाब से निकला जो पाइंदा था कभी
अब न सूरत है किसी ग़म की न अंदोहे ग़म
मिट गया दिल तो ग़मे दिल जो रंजीदा था कभी
खुदफ़रामोशी में क्या किस से शनायाई हो
इस दिले बेनिशां की आह कि ज़िन्दा था कभी
तुझ को ढूंढा तो फरामोश कर दिया खुद को
अब तो यूनुस भी नहीं जो तेरा बंदा था कभी
इश्क़ की जोत से ऐसी अगन इस मन में लगी
मिट गया दिल वही जो इश्क़ धंदा था कभी
आह.... इस दिल में तेरी याद भी नहीं बाक़ी
चश्मे बे चशम है ख़ाली कि जो दीदा था कभी

☆.....☆.....☆

१२ फरवरी २००४
(दुबई)

मेरे सरकार

.....☆.....

बुरे को छोड़ना क्या प्यार है मेरे सरकार
निभाओ मुझ को मेरे ऐब को मेरे दिलदार
नहीं है कोई हुनर मुझ में मैं खोटा सिक्का हूँ
पर तेरे इश्क़ की इनायतें मुझे दरकार
इतनी क़ुर्बत है भला कैसे छोड़ दोगे तुम
तुम मेरी जान हो, ईमान हो मेरे सरकार
कौन क़ाबिल है भला तेरे इश्क़ का गौहर
नाम लेवा हूँ, तेरी नज़र है मुझे दरकार
कुछ तो निसबत है मेरी तुझ से कि मैं रोता हूँ
और तेरे नाम पर आँसू बहे मेरे हर बार
मेरी औक़ात ही क्या खुद को मैं समझूँ कुछ
तू रहे दिल में मेरे, कह दिया तुझे दिलदार
ये न कहना कि ऐब हों तो छोड़ दूँगा तुझे
मैं इब्ने ऐब हूँ, फ़ितरत की है मुझे भरमार
मैं ख़ाकदार मैं ऐबी हूँ, स्याह मन है मेरा
ऐ शहनशाहे इश्क़ इक नज़र मुझे दरकार
कौन खाएगा तरस तेरे बन्दे यूनुस पर
तू ही जो ऐब मेरे देख कर रहे बेज़ार

☆.....☆.....☆

१५ फरवरी २००४
(दुबई ता लंदन)

मुहब्बत के मंदिर

.....☆.....

चिराग़े मुहब्बत जलाते रहेंगे ..... नग़माते गौहर सुनाते रहेंगे
तारीकी नफ़रत की छाई है हरसू ..... मुहब्बत की लौ हम बढ़ाते रहेंगे
है इन्सानियत की ज़रूरत मुहब्बत
तो पैग़ामे उल्फ़त बताते रहेंगे
हुआ नफ़रतों से अब इन्सान आजिज़ ..... मुहब्बत की महफ़िल सजाते रहेंगे
हमें तो फ़िकर है कि दुनिया है प्यासी ..... तो जामे मुहब्बत पिलाते रहेंगे
मुहब्बत न मुस्लिम, न हिन्दू यहूदी
हर इन्साँ के दिल में मुहब्बत खुदा की
हर इन्सां के दिल में चेहराए गौहर ..... बसाया गौहर ने बसाते रहेंगे
मुहब्बत है रामा, मुहब्बत गौहर है ..... मुहब्बत है मूसा मुहब्बत मुहम्मद
मुहब्बत ही पैग़ामे गौहर है लोगों
सदाए मुहब्बत लगाते रहेंगे
मुहब्बत का मंदिर है फक़्त क़ल्बे इन्साँ ..... हम तसवीरे गौहर सजाते रहेंगे
मुहब्बत के मंदिर बनाए गौहर ने ..... मुहब्बत के मंदिर बनाते रहेंगे
शिकस्ता दिलों में चिराग़े या गौहर
जलाना है हम को जलाते रहेंगे
जो ब्योपार करते हैं नफरत का लोगों ..... वो मज़हब बहाना बनाते रहेंगे
हमें तो ख़बर है गौहर है मुहब्बत ..... तराने मुहब्बत के गाते रहेंगे
चमकते दिलों पर नज़र उसकी ठहरे
दिल इस्मए गौहर से जलाते रहेंगे
दिल आमाजगाह है यही रूहे उलफ़त ..... बसाया गौहर ने बसाते रहेंगे

☆.....☆.....☆

२००५
(लंदन)

देखो गौहर इश्क़ में

.....☆.....

देखो गौहर इश्क़ में तोरे दीवानी हो गई
क्या जानेगी दुनिया मोरा में कहां पर खो गई

कैसी प्रीत लगाई मोसे, जान लेवा रोग है
मौत आने से पहले ही मैं अधमुई सी हो गई

आग लगे संसार को ऐसे जो न प्रियतम साथ हो
ज़िन्दगी को कोसती हूँ, मौत कहां पर खो गई

दीन धरम को मैं क्या जानूँ, मन में मोरा मीत है
इन के दरस करे जिस दम तो मैं उन्हीं की हो गई

शिकवा दर्द का कौन करे है? तरसी हूँ मैं दीद को
नैनन से मैं दीद की माला जपती थी अब खो गई

☆.....☆.....☆

२० जून २००५
(लंदन। दौरान ए शापिंग)

मन तालिब रियाज़ हस्तम

.....☆.....

दुख दर्द मेरा, जीना मरना,
तेरे नाम पे है, तेरे नाम पे है
लम्हे, साअ़त, जगना सोना,
तेरे नाम पे है, तेरे नाम पे है
वो दिल ही नहीं जो दिल था कभी,
वो जां ही नहीं जो जां थी कभी
क़ल्बो क़ालिब, जिस्मो अरवाह,
तेरे नाम पे है, तेरे नाम पे है
कम ज़र्फी है गर शिक्वा करूँ,
उस दर्द का जो तू ने है दिया
हर दर्द को अब हंस कर सहना,
तेरे नाम पे है, तेरे नाम पे है

गौहर गवाहे मन अस्त, अज़ गौहर हर चे रसद बेऐब अस्त

मन भर हाल ख्वाह हस्तम, ये हक़ की सदा, तेरे नाम पे है

गौहर मर्दए बुलंद हिम्मत रा दोस्त मी दारद

व अअ़माल पाकीज़ा रा ब नज़र कुबूल मुशर्रफ़ मी साज़ो

अज़ गौहर आफ़ियत मी तल्बम, अगर यूनुस ख़ता कुनद, शुमा अफ़ू कुनद

राज़े दिल के परी रोज़ गुमकर्दा बूदम माशाए गौहर ईं राज़ मन इम्रोज़ याफ़्ता अम

मन तालिब रियाज़ हस्तम, मन अज़ रियाज़ आमदम,

मन दरीं बहरे इश्क़ ग़र्क शुदन ख़्वाहम

☆.....☆.....☆

२००६

(लंदन)

इक चाहत

.....☆.....

इक चाहत है जिस्मों की और इक चाहत है रूह की
मेरी चाहत रूहानी है, तुझ से निस्बत रूह की
इक चाहत है जिस्मों की और इक चाहत है रूह की
मेरी चाहत रूहानी है, तुझ से मुहब्बत रूह की
इक चाहत जिस्मानी है और इक चाहत रूहानी
रूह जुदा हो चाहत से तो है उल्फत नादानी
आग लगाए रूह में हर पल सच्ची चाहत दिल की
शहवत में दिन रात जलाए है चाहत नफसानी
दिल का रिश्ता इश्क़ ए गौहर में सच्ची जोत लगाए
रूह का रिश्ता करे उजाला जब हो निस्बत दिल जानी

☆.....☆.....☆

२००४

(शारजा)

मर्कज़े दिल

.....☆.....

इक दिले बेक़रार रखते है,
पहलूए दिल में ख़ार रखते हैं
रस्मे उल्फ़त को उस्तवार करें,
हम यही कारोबार करते हैं
इश्क़े गौहर गुनाह है गर तो,
ये गुनाह बार बार करते हैं
इश्क़ रूहों की शनासाई है,
इश्क़ कब अख़्तियार करते हैं
जिस से मिल जाए दिल वही महबूब,
मरकज़े दिल में यार रखते हैं
इन के दीदार की तलब है हमें,
चश्म यूँ अश्कबार रखते हैं
गुले गौहर से शजरे इश्क़ जवां,
गुफ़्तगू मुश्कबार करते हैं
हम भी जाने हैं रस्म ए ग़ायब को,
एक दिले पुरइसरार रखते हैं
दिल गुज़रगाहे जल्वाए मअ़शूक़,
हम नज़र दिल के पार रखते हैं
दुनिया कहती रहे भले कुछ भी,
हम तो गौहर को यार रखते हैं
उन का वादा है लौट आऊँगा,
इस लिए इन्तज़ार करते हैं
यूनुस वो आएं जब तो कह देना,
देखा! हम तुम से प्यार करते हैं

☆.....☆.....☆

३ नवम्बर २००६

(लंदन)

आतिशे इश्क़

.....☆.....

फ़ितरते इश्क़ सूरते इन्सां आया
इतरते नूर नुसरते यज़दां आया
ज़ुलमतो नार बुझ के राख हुई
आतिशे इश्क़ ज़ुर्रते इमकां लाया
अमरे रब्बी से किया रब के मक़ाबिल जिसने
वो शाहे इश्क़ ऐसी नुदरते जहां लाया
असल असील हुआ नक़ल हो मकानी अब
मिज़ाजे नक़ल में फ़ितरते गुमां लाया
बाज़ी गरीए इश्क़ हुई आम कि वो
निशाने तीर और हसरते कमां लाया
वफ़ा की मिस्ल वो डाली है गौहर शाही ने
रंगे दौरे गौहर वो ग़ैरते ज़मां लाया
निशाते रियाज़ से हासिल हुई यूनुस वो खुशी
गिरिया से सबब वो हैरते फ़ुग़ां लाया

☆.....☆.....☆

१२ दिसंबर २००३

(लंदन)

गोशा नशीनी

.....☆.....

गोशा नशीनी क्या है? ये इक इम्तिहान है
इश्क़ो वफ़ा को आज़माने का सामान है
नज़रों का है फ़रेब, अक़्ल महवे जंग है
सहमी नज़र पे दिल को बड़ा इतमिनान है
मंडलाते हवादिस पे मुक़दर का तीर है
तदबीर गौहर शाही की उस पर कमान है
मोहकम यक़ीन अगर हो, गौहर शाही पर तेरा
नाज़ुक सा क़ल्ब भी तेरा मिस्ले चट्टान है
क्यूँ ढूंढता फिरता है हर इक सिम्त गौहर तू
इक ज़िन्दा क़ल्ब ढूँन्ड जो गौहर निशान है
आग़ोशे सदफ़ होता है गौहर समझ ज़रा
आ जाएगा मकीं जो तेरा दिल मकान है
इल्फाज़ की पैराई हो क्यूँकर सनाए रियाज़
जो कहकशां की तसबीह में गूंजे सुब्हान है
इक कहकशां लतीफ़ मेरे सीने में है मौजूद
ख़ाकी में सितारों की चमक उस की शान है
हर आँसू गौहर बनता है आग़ोश ए सदफ़ में
खूनाब फ़ुग़ां राहे गौहर रब्ते जान है
इस्मे गौहर से अफ़्ज़लो अअ़ला नहीं कलाम
इस्मे गौहर वसीलाए हुब्बो ईमान है
तुनक आबिए इश्क़ से बहर खुश्क है तेरा
हो ग़र्क़ बहरे इश्क़ में जो तेरी आन है
रह मुतंज़िरे इश्क़, बसा इश्क़ अंदरूं
गौहर है इश्क़, इश्क़ ही गौहर की जान है
आबाद कारे इश्क़ अराज़ीए रूह पे हो
वो क़सरे इश्क़ जिस पे खुदा भी हैरान है
अंदेशाए गिरिफ़्त नहीं तुझ को क्यूँ ज़रा
यूनुस गुमाने इश्क़ में गौहर जहान है

☆.....☆.....☆

२८ अप्रैल २००३

(लंदन)

गौहर को राज़ी करना

.....☆.....

गौहर को राज़ी करना इतना नहीं है आसां
इस दिल को साफ़ करना इतना नहीं है आसां
किबरो बुख़ल में खो कर, नारे हसद में जलना
शैतान से किनारा, इतना नहीं है आसां
शैतां पे खुद का धोका, इफ़लास है खुदी की
पहचानना खुदी को इतना नहीं है आसां
मेहदी का साथ देना, मेहदी पे जां लुटाना
मेहदी को मन में लाना, इतना नहीं है आसां
ये नफ़्स की ग़लाज़त, ये तुअ़फ़्फ़ने हसद जो
फैला है मन में सारा, मिटना नहीं है आसां
कहने को तेरे बंदे तेरा ही दम हैं भरते
इनको तेरा बनाना, इतना नहीं है आसां
दम घुट रहा है मेरा, सांसे उखड़ रही हैं
ऐसे में मेरा जीना, इतना नहीं है आसां
कुछ ऐसा करम फ़रमा, शरहे सदर हो इनकी
कि इनको राम करना, इतना नहीं है आसां
यूनुस है ग़म का मारा, ढूंडे तेरा सहारा
दुनिया को हक़ बताना, इतना नहीं है आसां

☆.....☆.....☆

२२ जून २००४
(लंदन)

गौहर कुल जग के इमाम

.....☆.....

गौहर कुल जग के इमाम ..... करलो हम को अपना गुलाम
हम ने आस है लगाई बड़ी से
घेर रहें हैं ग़म के अंधेरे ..... आओ मदद को गौहर मेरे
रख लो लाज तुम हमारी ..... हम है मंगती तुम्हारी
हम ने झोली है फैलाई बड़ी देर से
गौहर जी .... हम ने झोली है फैलाई बड़ी देर से
चाँद पे चहरा चमके तुम्हारा ..... दिल में है मेरे हुस्न तुम्हारा
सबके दिल में आओ गौहर ..... इनको अपना बनाओ गौहर
हम ने दी है ये दुहाई बड़ी देर से
गौहर जी ..... हम ने दी है ये दुहाई बड़ी देर से
सबसे अलग अंदाज़ तुम्हारा ..... सबसे जुदा है फ़ैज़ तुम्हारा
दिल से रूह में आओ गौहर ..... तन मन में बस जाओ गौहर
दिल की धड़कन है बढ़ाई बड़ी देर से
गौहर जी ..... दिल की धड़कन है बढ़ाई बड़ी देर से
ला इलाह इल्ला रियाज़ रा ..... ला इलाह इल्ला रियाज़ रा
रियाज़ुलजन्नाह के शहनशाह ..... मेरी रूह को भी ज़म करना
गौहर जी ..... **एम एफ़ आई** में आई हूं बड़ी देर से
तेरे बिना नहीं मेरा गुज़ारा ..... आँखों में बस गया चेहरा तुम्हारा
धड़कन धड़कन बोले गौहर ..... सांसों की सरगम में गौहर
तुम से प्रीत है लगाई बड़ी देर से
गौहर जी ..... तुम से प्रीत है लगाई बड़ी देर से

☆.....☆.....☆

१४ दिसंबर २०११
(श्री लंका)

गौहर लौट आओ

.....☆.....

गौहर मान जाओ, बस लौट आओ
बहुत हो गई देर अब लौट आओ
उदासी है हर पल और आँखें बुझी हैं
नहीं चैन इक पल गौहर लौट आओ
दिले मुज़तरिब की सदाएं हैं गूंजी
सदाओं को सुन कर गौहर लौट आओ
ज़माने ने मुझ को फ़साना बनाया
हक़ीक़त बताओ गौहर लौट आओ
क़वानीने उल्फ़त में महबूब रब है
है उल्फ़त को ख़तरा, गौहर लौट आओ
नहीं लग रहा है मेरा दिल यहां पर
या मुझ को बुलाओ या खुद लौट आओ
कहीं जश्ने शादी कहीं रंजे फ़ुरक़त
मुझे भी हंसाओ गौहर लौट आओ
कहीं वस्ले अजसाम और रौनकें हैं
मेरी उजड़ी दुनिया में भी लौट आओ
कहीं ढोलकी पर धमक है खुशी की
कहीं दिल के नाले गौहर लौट आओ
कहीं कुरबते मर्ग यूनुस को लाहक़
गौहर ना सताओ, गौहर लौट आओ

☆.....☆.....☆

१३ सितंबर २००५
(लंदन)

गौहर मेहदी ईश्वर अल्लाह

.....☆.....

गौहर मेहदी ईश्वर अल्लाह
अलिफ़ लाम रा रा रियाज़
राम में खो कर भगती रा रा रियाज़ करे
ॐजय जगदीश हरे ..... ॐजय जगदीश हरे
हृदय में रियाज़ बसे

ॐजय गौहर महराज हरे
ॐजय गौहर मंगलम भगवानम महराज हरे
ॐजय शुभ नाम जाप मेरे रियाज़ हरे
ॐजय जगदीश हरे ..... ॐजय जगदीश हरे
हृदय में रियाज़ बसे

रा रा रियाज़ करे ..... रा रा रियाज़ करे
भगत जनों के संकट पल में दूर करे
ॐजय महराज गौहर हरे - २
मन में बसाए प्रभू गौहर जो राम कहे
हृदय में रियाज़ बसे

☆.....☆.....☆

१६ अक्तूबर २००४
(लंदन)

नामे गौहर से बढ़ कर

.....☆.....

(हिस्सा दोयम)

गौहर शाही से टकराएं सजदे, कुल खुदाई के जबरूत जाकर
ज़िक्र सारे बनें ज़िक्रे गौहर, है सआ़दत यही खुश्को तर की
है **अलिफ़ लाम रा** विर्दे अल्लाह, आलमे ग़ैब की है मुनाजात
आज हम भी पढ़ें **रम रियाज़ रा**, हम को तौफीक़ है ये गौहर की
अल्लाह अल्लाह करें अल्लाह वाले, गौहर गौहर कहें गौहर वाले
सायाए रियाज़ में गौहर वाले, हम को ताकीद है ये गौहर की
रामा रामा रमा रम रियाज़ रा मीम मेहदी रमा अल्मरा रा
रा में गुम है बहक़ अलिफ़ अल्लाह, हम को तल्क़ीन है ये गौहर की
मेरा कोई शनासा नहीं है, कोई नज़रों को भाता नहीं है
कितनी दुश्वार थी ज़िन्दगानी, जैसे तैसे की मैने बसर की
मुझसे पूछें हैं नामो निशां क्यूँ, मुझ पे करते हैं लअ्नो तअ्न क्यूँ
मैं शराराए इश्क़ निशान हूँ, क्या कभी मैंने इस में कसर की
क़ैदे ज़ुल्फ़े गौहर हल्क़ए जां, मशग़लाओ दिलम क़िब्लाए जां
कर रहा हूँ रक़म खूने दिल से, बात मन्ज़ूम हो या नसर की
ज़िंदगी का निशां बंदगी है, बंदगी गौहरी बंदगी है
ज़िंदगी ऐसी क्या ज़िंदगी है, जो न इश्क़े गौहर में बसर की
दिल्बरी दिल से दिल्बर से साबित, शायरी हुस्ने गौहर से साबित
हक़ परस्ती हक़ायक़ से मोहकम, सच वही जिस में तल्क़ीं गौहर की
रूह सिसकती है दिल जल रहा है, जान रोती है क्या हो रहा है
दीद मुझ को अता हो गौहर अब, दिल को आ़दत नहीं है सबर की
गोशाए दिल रहे बस सलामत, दीदे गौहर बने दिल की आदत
आँखें टिक जाएं राहे गौहर में, बात हो जब भी राह ओ सफ़र की
तेरी ख़िल्वत में भी मेरी जल्वत, हो यही मुझ से बेबस की क़िसमत
दीद होती रहे हर घड़ी बस, दिल को ताक़त नहीं है हिजर की

☆.....☆.....☆

२६ सितंबर २००३
(लंदन)

हज़्रां विच्चों

.....☆.....

हज़्रां विच्चों आया ते गौहर नाम धराया ए
रब वी ओदे होके भरदा, इश्क़ दा ओ सर्माया ए
अव्वल नाम रियाज़ तुसाडा, अव्वल ज़ात तुसाडी ए
दोयेम अल्लाह सोयेम ख़ल्क़त, सब ते तेरा साया ए
नबी वली नूँ भेद नइ लभ्दा, मेथों पुछदे सारे नें
अख्खाँ खुल गइयां साड लेया दिल, इश्क़ तदे घर आया ए
अलिफ़ लाम रा भेद तुसाडा मेथों पुछदे लोक नमाने
भेद पुछाते मुक गई हस्ती, यार ने भेस वटाया ए
कलमाए गौहर पढ़नाए ते बांगे मुहब्बत देनी ए
गौहर गौहर होसी इक दिन, गौहर ने फरमाया ए
यूनुस गौहर गौहर करदा, यूनुस रल रंग बेली संग
यूनुस नाल रल जाओ संगियो, यूनुस गौहर जाया ए

☆.....☆.....☆

२३ अगस्त २००५
(लंदन)

हज्रे अस्वद का फैज़

.....☆.....

हज्रे अस्वद का फैज़ हो तो रहा है
गुन्चाए दिल सभी का खिल तो रहा है
सीने में दिल सभी के मचल तो रहा है
गौहर नज़रों से ओझल दिल में बस तो रहा है
जाम मस्ती का आँखों से झलक तो रहा है
अब्रे जुल्फ़े रियाज़ उमड़ तो रहा है
रंगे गौहर दिलों में बिखर तो रहा है
गौहर आँखों से दिल में उतर तो रहा है
रूखे रियाज़े गौहर मन में आ तो रहा है
उन से मिलने को दिल अब मचल तो रहा है
मेरा दिल उन के दिल से संभल तो रहा है
आँखों से अश्के खूं निकल तो रहा है
उन की आमद है और दम निकल तो रहा है
नग़माए गौहर दिल में मचल तो रहा है
साथ तेरा गौहर मेरे पल पल रहा है
हर तरफ़ नामे गौहर फैल तो रहा है
तेरी मेहनत का यूनुस फूल खिल तो रहा है

☆.....☆.....☆

२००४

(लाहौर। पाकिस्तान)

हल्क़ा जमाले यारम

.....☆.....

हल्क़ा जमाले यारम मुश्के मकाने दयारम

मन आसियम बगोयम रहमत कुनम रियाज़म

तेरी आँखों का नशा है, हों मस्त जिस का हमदम
राहे सलूक मेरी, तेरी ज़ुल्फ़ का हसीं ख़म
है तराज़ुए मुहब्बत, मेरी आहों की शबे ग़म
तेरा हुस्न दिल में यूं है जैसे हो गुल पे शबनम
दिल है मक़ामे उल्फ़त, आँखें वसीलए दिल
अश्कों की है रवानी चलता है दम ग़म
वो हूक ढूंढता हूं जो थी नियाज़ मेरी
टकराए तेरे दिल से, वो आह है लबे दम
शिक्वा नहीं किसी से कम्याबीए वफ़ा का
क्यूंकि वफ़ा छुपी है बारे ख़ज़ीनाए ग़म
ग़ैरतगरी वफ़ा से कह दो कि हम से मिल ले
हम ताजिरे वफ़ा हैं, हम में नहीं वफ़ा कम
हम सायाए वफ़ा हैं, सरमायाए वफ़ा हैं
हम हैं फ़रोग़े ईमां, मशकूर मसजूदे हरम
हम मंदिरों की जां हैं, हम मस्जिदों का ईमां
कृष्णा की बांसुरी में, अग्नि में तूर की हम
हम राम की कथा हैं, रावण की दुश्मनी हैं
लंका बचाएंगे, सीता का धर्म हैं हम

☆.....☆.....☆

(लंदन)

नज़्र

(हिस्सा दोयेम)

.....☆.....

हर नज़ारे में हैं गौहर पिन्हां ..... चश्मे नाज़िर में गर गौहर आए
चश्मे ज़ाहिर की ये ख़राबी है ..... गर न गौहर तुम्हें नज़र आए
हर हुदा के इमाम हैं गौहर ..... हर हुदा से गौहर नज़र आए
इस्मे गौहर है रूह की तकसीर ..... ज़िक्रे गौहर से रूह निखर जाए
हर अज़ूए जिस्म को है दरकार ..... इश्क़ की लै सभी में भर जाए
हर नफ़्स तेरे गीत गाएगा ..... तब ही यूनुस का दिल सबर पाए
काम मेरा जहाने ग़ैर में क्या? ..... इश्क़े गौहर को हर नफ़र पाए
मुंतज़िर हूँ मैं उस घड़ी का जब ..... इश्क़े गौहर में तन से सर जाए
यही दुआ है तेरी बारगाह में या गौहर ..... हर नफ़्स तेरे दिल में घर पाए
जिसका माबूद गौहर शाही है ..... वही सजदाए गौहर कर पाए
बस कि तौहीद है इक ज़ात में ज़म होना ही
उसी को देखना उस पर ही जां बिखर जाए
बे दख़ल कर दिया ला रियाज़ को मेरे दिल से
यही करम है अगर कोई इश्क़ी गुर पाए
इश्क़ की लौ में जला जाता हूँ ..... फिर भी क्यूँ रूह को सबर आए
मेरी मंज़िल है अ़दम फ़िल फ़नाए रियाज़ सनम
नमूदे रियाज़ हो हस्ती में गर सफ़र आए
मन चली ख़्वाहिशों की हो तकमील ..... क़ल्बे यूनुस की लै संवर जाए
इंन्तेहाए गौहर में खो कर ही ..... इब्तिदाए रयाज़ घर पाए
मंज़िलें कितनी अभी बाक़ी हैं ..... रूह का बन कभी जसर जाए
जो वफ़ादारे गौहर शाही है ..... ग़ैरे गौहर से क्यूँ न फिर जाए
सर झुकाने को हाँ में हाज़िर हूँ ..... नक़्शे गौहर मगर नज़र आए
तू वफ़ादारे गौहर शाही है ..... लम्हाए इम्तिहां क्यूँ घबराए
अ़हदो पैमां हैं तेरे गौहर से हिफ्ज़े गौहर में क्यूँ ख़तर आए

☆.....☆.....☆

दीद की बाज़ी

.....☆.....

हारे हम हारे गौहर दीद की बाज़ी रे
नाही लागे मनवा मोरा कैसी सज़ा दी रे
यही चिंता मनवा खाए कब होगा राज़ी रे
अलिफ़ लाम रा रा रा रा रा रा रियाज़म रा
कोनों नाही भाए मोहे मैं हूँ रियाज़ी रे
नैनां की जोती सइयां मोरे किस काम की
तोहे नाही देख सकूँ मैं, कैसी नम नाकी रे
चाँद में सूरत तोरी मन भड़कावे रे
आन मिलो अब सजना फैली है उदासी रे
अखियन का दुख सजना मनवा न जाने
दीद की गौहर तूने आदत डाली रे
बे परवाही तोरी मोरी जान ले लेगी
घायल है मनवा मोरा, मैइयत सजा ली रे
बीता ये जश्ने शाही, अब भी न आए
कोई आसरा ही दे दो, आया सवाली रे
यूनुस दीवाना पागल खाना बदोश ठहरा
तोरा सहारा ढूँढे, सुन लो गौहर शाही रे

☆.....☆.....☆

३१ अक्तूबर और १ नवम्बर की शब
(दुबई ता बैंकॉक)

प्रीत

.....☆.....

होंटों से छूलो तुम, मेरा गीत अमर कर दो
बन जाओ मीत मेरे, येह प्रीत अमर करदो
मेरी रूह में समा जाओ, और मुझ को अमर करदो
ज़म करलो मेरे मालिक, और अक्से गौहर भर दो
मुझे नफ़्स ने रोका है, शैतां ने सताया है
इक नज़रे करम कर के, मेरा दिल तेरा घर करदो
अल्लाह से न निस्बत है, न दीन का शैदाई
क़दमों में जगह दे दो, मेरी ज़ीस्त अमर करदो
नाकारा हूँ आजिज़ हूँ , मंगता हूँ तेरा गौहर
मैं आप का कुत्ता हूँ, ये क़ौल अमर कर दो
मुझे इश्क़ है तुम से गौहर, बंदा मैं तुम्हारा हूँ
दुनिया मुझे कोसे है, मेरा पुख़्ता सबर करदो
मिट्टी का मैं इन्सां हूँ, तुम रब के भी ख़ालिक हो
मेरी प्रीत तो झूटी है, ये प्रीत अमर करदो
तुम मेहदीए बरहक़ हो, दुनिया के मसीहा हो
मेरे दिल में भी आ जाओ, मेरा दिल भी क़मर करदो
दुनिया ने सताया है, अपनों ने भरम तोड़ा
तुम भरम रखो मेरा, येह रीत अमर करदो
रियाज़ुल्जन्ना तक तुम, मुझे साथ लिए चलना
मेरा मान रखो गौहर, उम्मीद अमर करदो
ये ज़िन्दगी फीकी है, तेरी दीद से खाली है
आँखों में बस जाओ, से नज़र अमर करदो
तुम इश्क़ के सरगम हो, तुम राग रियाज़ी हो
संगीत सुरों में गौहर, ये गीत अमर करदो
यूनुस को भी दासी रखो, मन मीत मोरे गौहर
बस जाओ मन आंगन में, मोरे गौहर नज़र करदो

☆.....☆.....☆

दिसम्बर २००६
(लंदन)

तेरा नक़्श तुझ को पुकारे है गौहर

.....☆.....

हम अपना निशां और फ़ुग़ां छोड़ आए .... जहां भी गए दासतां छोड़ आए
ये सोचा था न कि सितारे किसी दिन .... उड़े पंख बन कर मकां छोड़ आए
बसाया था जिन को तेरे वासते बस .... सितारों का क्यूँ वो जहां छोड़ आए
न सूरज की गरमी न चँदा की ठंडक .... सितारों की झिलमिल कहां छोड़ आए
जहाँ मेरी नज़रों को तरसे है कोई .... निशाँ पस तेरा हम वहाँ छोड़ आए
किसी को गिला और शिकवा हो क्यूँकर .... हमारी नज़र थी जहाँ छोड़ आए
निशां और कमां का ये बंधन है कैसा .... निशां मिट गया तो निशां छोड़ आए
वो तीरो निशां पस हुआ पार दिल के .... तो समझो कि यूनुस कमां छोड़ आए
किसी दिल में रहना तमन्ना किसी की .... निशाने मुहब्बत जवां छोड़ आए
जो इल्ज़ामे उल्फत पे सर काट दोगे .... तो सुन लोकि हम जिस्मो जां छोड़ आए
न ख़्वाहिश किसी दिल में रहने की हम को .... इक आशिक़ के दिल की ज़ुबां छोड़ आए
ख़बर! रस्मे दुनिया है ज़ुल्मो सितम बस .... जो हो संग बारी तो जां छोड़ आए
ये लाशाए यूनुस तड़पता रहेगा .... उसे हम बेगोरो कफां छोड़ आए
उन्हें राहे उल्फ़त से रोका बहुत था .... मगर उन की ज़िद थी फ़ुग़ां छोड़ आए
उन्ही की मुहब्बत के समरात हैं ये .... गए खुद थे खुद को वहां छोड़ आए
न शिक्वा करे कुछ सितम का किसी से .... न ठहरे किसी राह, गुमां छोड़ आए
तेरा नक़्श तुझ को पुकारे है गौहर .... बुला लो हमें हम ज़मां छोड़ आए
उन्हें कहना यूनुस है नन्हा सितारा .... चमकता रहेगा जहां छोड़ आए

☆.....☆.....☆

१५ फरवरी २००४

(दौरान ए परवाज़, दुबई ता लंदन)

रब्बे आला रब्बे अकबर रा रियाज़ रब रियाज़

.....☆.....

हम ने हर मुसीबत में या गौहर पुकारा है
या गौहर के नारों से हर बला को टाला है
चाँद और हज्रे अस्वद पर नक़्श उनका रौशन है
जिसने चूमा उल्फ़त से उसको बख़्श डाला है
दावाए मुहब्बत अब यूँ तो करते हैं सब ही
जिस के दिल में गौहर है वही गौहर वाला है
आज दौरे ग़ैबत में हर तरफ अंधेरा है
जल्वाए गौहर शाही, ने हमें संभाला है
नज़रे मेहदी फैज़े मेहदी सौहबते गौहर शाही
कल भी हम को हासिल थी आज भी उजाला है
आखिरे ज़मां गौहर, मेहदीए जहां भी हैं
वो न माने गौहर को, जिसका क़ल्ब काला है
कुल जहां में गूंजेगा नाराए गौहर शाही
रब्बे आला गौहर हैं, इस्मे गौहर आला है
हम पे हक़ है गौहर का, हम ही सर कटाएंगे
पत्थरों की बारिश में, हमने घेरा डाला है
नज़रे गौहर शाही से चल रहा है ये कारवां
मेहदी फाउंडेशन का हर कारकुन निराला है

☆.....☆.....☆

५ जून २००५ (लंदन)

(असमा शाही के लिए तोहफ़ा)

चश्म ए गौहर

.....☆.....

हम ने सोचा था न बोलेंगे ज़ुबाने इश्क़ से
पर अदाए इश्क़ है सब सह के कह जाने का नाम
मेरे होठों ने किया जब सजदाए नामे रियाज़
आ गया फिर हुक्म यह है इश्क़ छलकाने का नाम
दिल रूबाई क्या? दिल्बर की सदा सुन लीजिए
दिल रूबाई जान दे कर दिलरूबा होने का नाम
चश्मे यूनुस मस्त हैं चश्मे गौहर मदहोश में
रूह से थामा हुआ है इश्क़ बिखराने का जाम
जुस्तजूए जांनिसारी में कहां मैं खो गया
जाँ निसारी ही सबक़ है जां संवर जाने का नाम
तुम ने देखा ही नहीं यक बार चश्मे रियाज़ में
चश्मे दिल्बर इश्क़ सागर है छलक जाने का नाम
इक निदाए बेबसी पे झट से थामा रियाज़ ने
आमदे गौहर से पाया इश्क़ सिखलाने का जाम

☆.....☆.....☆

(लंदन)

दिल रुबाई

.....☆.....

इस दिल की दिलरूबाई का चेहरा तुम्ही तो हो
इस महफिले रअ़नाई का सेहरा तुम्ही तो हो
तुम्हारे हुस्न के आंचल में पनाह दिल को मिली
इस दिल की हक़ नुमाई का पहरा तुम्ही तो हो
दीनो धरम की क़ैद से आज़ाद कर दिया
जिस ने किया बेगाना शनासा तुम्ही तो हो
आँखों में दीप इश्क़ के जिस ने जलाए हैं
वो हुस्ने लाज़वाल का मोहरा तुम्ही तो हो
ऐ जाने मन, नाज़ुक बदन, ऐ इश्क़ सरापा
ऐ इश्क़े गौहर, इश्क़ का मिसरा तुम्ही तो हो
देख कर तुम को मेरे दिल से गिर गए सब बुत
इस दिल की ज़ौक़ आराई का नक़रा तुम्ही तो हो
यूनुस गौहर माशूक़ बमाअ् मिसले इश्क़ है
इस इश्क़े गौहर यार का क़तरा तुम्ही तो हो

☆.....☆.....☆

२६ जुलाई २००३

(मुंबई हिन्दुस्तान)

फ़ेअ़ले खुदा

.....☆.....

इस फ़ेले खुदा पे तअ़ज्जुब है
क्यूँ नफ़रत को तख़्लीक़ किया
इस फ़ेले खुदा पे मैं हैरां हूँ क्यूँ फ़ितरत को ज़िंदीक़ किया
इस वहशत से दम घुटता है,
इस नफ़रत से दिल जलता है
इन इंसानों में जाने क्यूँ, नफ़रत का लावा पलता है
दिल सहमा सहमा रहता है,
नफ़रत का तअ़फ्फुन फैला है
मेरी सांसें रूक रूक जाती हैं, दिल आहें भर भर रोता है
आदम तो खुदा की सूरत है,
औसाफ़े खुदावन्दी से बना
क्या नफ़रत भी है सिफ़्ते खुदा, आदम का दिल क्यूँ मैला है
क्यूँ दीन धरम में नफ़रत है,
क्यूँ ज़ात पात में फ़ितना है
कहने को सारे इंसानों का बावा आदम लगता है

☆.....☆.....☆

१७ दिसम्बर २००४
(लंदन)

हुस्ने गौहर

.....☆.....

इश्क़ में हूँ बेक़रार, अब हो जा दिल के आर पार
तू ही है बे जान दिल का इक हक़ीक़ी ग़मगुसार
क्या हक़ीक़त है मेरी इक क़तराए बे नूर हूँ
क्यूँ खुदी की खोज में होता रहूँ मैं शर्मसार
अश्क बारे चशम है मैं गर्द बारे रूह हूँ
जिस्म की सहराई में खुद ख़ाक हूँ और ख़ारदार
इश्क़ है तेरी कशिश, नज़रों का तिलिस्म है तेरा
तेरे ही अफ़्कार तुझ से हो रहे है मुश्कबार
मैं हूँ आजिज़, इश्क़ मेरी जिन्स फ़ितरत थी कहां
तू ने फ़ितरत को मेरी बख़्शा है मुझ से फ़रार
यूनुस हसीं गौहर ने बनाया है तुझे मोहसिन
हुस्ने गौहर को देख कर आता रहे क़रार

☆.....☆.....☆

६ मार्च २००५

इश्क़े गौहर का फव्वारा

.....☆.....

इश्क़े गौहर का बहता हुआ फ़व्वारा है वो
बहरे गौहर से मिलता किनारा है वो
दुनिया कुछ भी कहे पर हक़ीक़त है ये
वो हमारा था अब भी हमारा है वो
दर्द है गर उसे ठेस हम को भी है,
कौन समझे है कि बेसहारा है वो
उस को तल्क़ीन है चुप रहे सह रहे
सह रहे हर नज़र का नज़ारा है वो
उस से मिल लो जिस से हम मिलाएं तुझे
मिल के देखो कि रंग कैसा न्यारा है वो
हम पे बोहतान है गर कहो हम अलग,
चाँद के साये में इक सितारा है वो
हम बताएं तुझे कैसे दिल की ख़लिश
इश्क़ में जल चुका इक शरारा है वो
उसके इसरार उस पर भी मुबहिम रहे
क्यूँकि मेरे ही साग़र का धारा है वो
वो जुवारी है मेरे इश्क़ का सुनो,
अपनी हस्ती को बाज़ी में हारा है वो
मिट गया निशां तो शनासाई क्या
खुद डुबो कर हमारा उभारा है वो

☆.....☆.....☆

२० जनवरी २००४

(दुबई ता पाकिस्तान)

गौहर बोले ख़ैर है

.....☆.....

जब भी किसी मुश्किल ने घेरा, गौहर बोले ख़ैर है
हक़ है गौहर का फ़रमाया, बाक़ी हेरा फ़ेर है
ग़म, बला और मुश्किलें सारी इश्क़ के तोहफ़े लगते है
चेहराए गौहर सामने होतो यारों ख़ैर ही ख़ैर है
बहुत हो गया अल्लाह हू, अब जिक्रे गौहर गूंजेगा
रब्बे आला रियाज़े गौहर हैं, बाक़ी हेरा फ़ेर है
दुनिया की औक़ात ही क्या है झुक जाएगी क़दमों में
नग़माए गौहर गाते रहो बस बाक़ी सारी ख़ैर है
डरने वाले डरते रहें हम बे बाक़ी से बोलेंगें
गौहर रब्बे इलाही है और बाक़ी हेरा फ़ेर है
इश्क़े गौहर हो पैराहन तो रूह की सजधज क्या कहिए
जिस्म भले आड़ा टेढ़ा हो यारों ख़ैर ही ख़ैर है
यूनुस हम ने सोच लिया है, इश्क़े गौहर फैलाएंगे
जिसमें दम है रोक ले हम को, गौहर बोले ख़ैर है

☆.....☆.....☆

२००४

(लंदन)

जल्वा ए यार

.....☆.....

जल्वाए यार खुमारे यार की गुफ़्तार बने
जफ़ाए यार से इस नफ़्स का ज़ंगार सजे
बक़ाए इश्क़ की ख़ातिर फ़नाए जान हो पस
क़रारे जान हो जब महरूखे़ रूख़सार बसे
छेड़ ख़ूबां वही इक तीर नीम कश ठहरे
तेरी वफ़ाए दिलरूबा पे जब वो प्यार हंसे
सफ़ाए क़ल्ब हो सरेदस्त, जफ़ाए नफ़्स निहां
तब ही तो क़ल्ब की तोती बहम इसरार कहे
जल्वाए यार है इश्क़ वले माशूक़ है यार
बसाओ यार अंदरूं, यही दिलदार कहे
ज़िक्रो अज़कार हैं मोनिस, अनीसे जान है इस्म
इश्क़ खुद यार है जब रूह के परदादार रहे
तुझे दिखाए है यूनुस गौहर की चश्मे निहां
वो मचल्ते हुए इसरार कि अफ़कार बने

☆.....☆.....☆

२० अक्तूबर २००३

(लंदन)

जुनूने मुहब्बत

.....☆.....

जुनूने मुहब्बत अयां कर चले ..... अदाए मुहब्बत वफ़ा कर चले
सज़ा और जज़ा का नहीं है कोई डर ..... यहीं रोज़े महशर बपा कर चले
हमें किसने समझा हमें किसने जाना ..... न समझे कोई ये दुआ कर चले
ये अंदाज़े उल्फ़त ये रम्ज़ो कनाया ..... तुम्हारी अदा है अदा कर चले
हमें क्या ख़बर थी मुहब्बत खुदा है ..... यूँ भूले से रस्मे खुदा कर चले
जामए दिल की उरूसी मुहब्बत ..... खूं रिस्ता है रस्मे हिना कर चले
कभी खुद को भी याद करता नहीं मैं ..... खुदी में खुदी को फ़ना कर चले
बिखरते हैं आंसू मचलता है ये दिल ..... कहां आ गए हम ये क्या कर चले
मासूम दिल पर हज़ारों हैं तोहमत ..... हम अपनी अदा पर जफ़ा कर चले
ज़माने को उल्फ़त की हाजत नहीं है ..... यूँ जिन्से मुहब्बत छुपा कर चले
न आओ क़रीब इतना यूनुस के लोगों ..... कि यूनुस को तुम से जुदा कर चले

☆.....☆.....☆

२००७
(लंदन)

गौहर शाही शाफ़ी गौहर शाही काफ़ी

.....☆.....

जिस्मे गौहर लाफ़ानी है ..... ये क़ौल रहमानी है
गौहर दिलबर सुलतानी है ..... जो न माने शैतानी है
हम सबने दिल में ठानी है ..... गौहर की शान बतानी है
अल्लाह का अक्स नूरानी है ..... गौहर का अक्स निहानी है
यह क़िस्सा ला मकानी है ..... कि रूह गौहर में समानी है
जल्वों की अरज़ानी है ..... और **यूनुस** उस की निशानी है
गौहर मह रूख सुल्तानी है ..... यह सूरत दिल में लानी है
यह बातें सब इल्हामी है ..... गर न माने दिल में ख़ामी है

☆.....☆.....☆

यकम फ़रवरी २००७

(लंदन)

संगे जानां

.....☆.....

जुर्अते ताक़ते इज़हारे तमन्ना देखो
नक़्शे गौहर से इक शोला निकल जाए है
हज्र अस्वद में हमें नक़्शे गौहर से मिलना
लम्हा सदियों से थमा आज चले आए है
दावए मिलकी नहीं दावए खुश क़ल्बी है
बख़्त इन्सां का शरहे सदर हुआ जाए है
आफ़रीनिश से शबे महजूब की काली सयाही
अब रंगे रियाज़ से सुर्ख़ हुई जाए है
नशतरे कुफ़्र के ज़ख़्मों को मंदील करें
और इंसो जिन्नात की तक़दीर भी बन पाए है
इक मुहम्मद जिसे मेहदी का शऊर न था
इक ये क़ाफिला जो हदफ़े इश्क़ तक भर जाए है
दावा करते हैं मिलकियत का हज्र अस्वद पर
यह मेरे रियाज़ का संगे जानां है जो घर आए है
आते आते आएगा दुनिया को यक़ीन मेहदी पर
जाते जाते जाएगा यह कुफ़्र जो बिफर जाए है
झुकना होगा हर एक ज़ी नफ़्सो ज़ी रूह को
यही फ़रमाने गौहर है जो हक़ पाए है

☆.....☆.....☆

१३ फरवरी २००७

(लंदन)

नज़रे गौहर से जले है शमा

.....☆.....

खुद गौहर ने जलाई है जो शमा
फक़त उस की लौ मैं बढ़ा रहा हूँ
रूखे़ यार की दे के जुस्तजू
इन्हें इश्क़ की सान पे चढ़ा रहा हूँ
रह गोश बदिल सुन ज़रा,
नए राज़ दिल ये सुनाता है
इसी दिल को खबर है यार की,
इसी दिल की कही किए जा रहा हूँ
कभी रूह के मशवरे भी सुनता हूँ,
कभी इसकी कसक भी चुभती है
कभी अन्ना की बेचैनी से
निहां सूएदार चढ़ा जा रहा हूँ
कभी नफ़्स की फ़रमाइश कि
बिठाओ सोहबते यार में
कभी जिस्म के तक़ाज़ों पे
चन्द आंसू बहाए जा रहा हूँ
कभी सिर्री के राज़े चमन
और ख़फ़ी के इसरारे जमीअ़
कभी इख़्फ़ा के छुपे भेद मैं
सरे आम किए जा रहा हूँ
यही पैग़म्बरों को हुई ख़लिश,
कभी वलियों को ये हुई फ़िकर
कभी हैरत हुई **यूनुस** तुझे,
येह मैं क्या किए जा रहा हूँ
☆.....☆.....☆

५ जुलाई २००३
(लंदन)

खुद में मुझ ही पाओ

.....☆.....

खुद में मुझ ही पाओ, खुशबू में महके जाओ
कोई साज़ ऐसा छेड़ो, मस्ती में डूब जाओ
यह तेरा मेरा बंधन रूहों की है आराई
तुम हो उरूसे गौहर! आँचल ज़रा उठाओ
इक लम्हाए रियाज़ है तेरी मताए हस्ती
खुद भी रहो दीवाने, लोगों को भी पिलाओ
सीने से क्या लगाऊँ, सीने में हूँ मैं बैठा
पीने का तज़करा करो, बहरे गौहर बहाओ
जो तुम से रंग मांगे, रंग दो उसे गौहर में
जो तुमको छोड़ जाए, तुम उसको भूल जाओ
दीवानगी सिखाओ, उल्फ़त का भरम रखो
गौहर की आरज़ू में, गौहर को दिल में लाओ
जिस की मुराद जो है उस को वही मिलेगा
तुम नाराए गौहर से सोतों को फिर जगाओ
जो मन में खोट होगा तो क्या गौहर मिलेगा
सच्चों में उठो बैठो, सच्चों पे रंग चढ़ाओ
यूनुस तू हमारा है, हां! हम को तू प्यारा है
प्यारों को प्यार देकर तुम दौड़े चले आओ

☆.....☆.....☆

१३ मई २००४

(लंदन)

रूहे बेक़रार

.....☆.....

क्या कोई ज़ख़्म नया आए है ..... रूह में हौल आए जाए है
फिर तमन्ना है जां से जाने की ..... फिर कलेजा हलक़ को आए है
फिर मेरी रूह को बेक़रारी है ..... फिर मेरी रूह तिलमिलाए है
मुझसा बेबस भी भला क्या होगा ..... यार आए है लौट जाए है
फिर नया दाग़ मेरे दिल पे लगा ..... फिर कोई रोता छोड़ जाए है
फिर हुआ उन से इश्क़ का दावा ..... जो ख़ुदा की समझ न आए है
रूह बेबस है दिल फ़नाए फ़ना ..... फिर भी क्यूँ अश्क रवाँ आए है
वो जिस ने दिल की तार जोड़ी है ..... चुपके चुपके वही समाते हैं
पस जो चाहे करे वही खुद जां ..... मुफ़्त इल्ज़ाम हम पे आए हैं
हम ने चाहा जिसे चाहा किया ..... उन को भी प्यार हम पे आए है
इश्क़ क्या है? भंवर है माशूक़ का ..... जिसमें आशिक़ तो डूब जाए है
क्या ख़बर खुद की इश्क़ बेखुद में ..... खुद से बेगानगी समाए है
इश्क़ यक जां बना देता है ..... हिसए अदराक क्यूँ न आए है
इश्क़ में इश्क़ ही मआबूद हुआ ..... इश्क़ किस की समझ में आए है
इश्क़ आए तो क्या रहे बाक़ी ..... क्या किसी की जगह बचाए है
नफ़्स को खौफ़ मिला, दिल को उलझनें लेकिन
रूह से बात करे उस की सुनी जाए है
फिर गया उनकी बज़्म में यूनुस ..... जो बुलाए है न खुद आए है

☆.....☆.....☆

३ फरवरी २००५

रमज़े दिल्बर

.....☆.....

क्यूँ मेरे दिल को बेक़रारी है,
रमज़े दिल्बर की हिस्सा दारी है
पहलूए यार को क़रार हुआ,
नक़्शे गौहर की क्या निगारी है
उस ने जकड़ा है कुछ उसूलों में, कुछ वफ़ाओं की क़रज़ादारी है
इब्तिदा इन्तिहा नहीं मालूम,
रोज़े अज़ल से यह बीमारी है
अश्क और इश्क़ की रस्म अजीब,
इश्क़ आए तो अश्कबारी है
इश्के़ दिल्बर वफ़ाए दिल्बर है, मुश्के दिल्बर की ज़ालह बारी है
तमन्ना जो दिल में जाग उठी,
उस तमन्ना की दिल सवारी है
पलकें बेहिस आँखें पत्थर,
क्या कोई समझे क्या बीमारी है
इश्क़ से हाल में तग़ैयुर है, इश्क़ की ज़र्ब पे दिल कारी है
इश्के़ दिल्बर में तुझपे क्या गुज़री,
फ़िराक़ो हिज्र से क्यूँ यारी है
वो तबस्सुम से भरा चहराए दिल्बर तो देखो,
जो मेरी धड़कनों पे तारी है
यूनुस जान वो जाने तमन्ना देखो, जो तेरे ज़ख़्म पे मरहम कारी है

☆.....☆.....☆

२००५
(लंदन)

हुस्ने यूनुस

.....☆.....

मैं अक्से यार ओ मुश्के यार हूँ आज़मा कर देख ले
नग़माए गौहर हूँ या फ़साना कोई गुनगुना कर देख ले
ज़िन्दगी की मानिंद तेरी सांसों में मेरा बसेरा है
हक़ए दिल्बर को आइनाए इश्क़ में आज़मा कर देख ले
रंगे गौहर से है महरूम तो चला आ बज़्म में मेरी
सिबग़तुर्रियाज़ में तू खुद नहा कर देख ले
न मिले महरमे दिल कोई तो मेरे पास आ
इस हरमिने इश्क़ को भी काबा बना कर देख ले
नक़्शे गौहर जो हवेदा हो तेरे दिल पर भी
फिर मेरे दिल को तू महवर बना कर देख ले
दहर में नूरे खुदा वजहे तसल्ली जो न हुआ
नूरे गौहर को फिर दिल में समा कर देख ले
जिन्से उल्फ़त में महसूस हो कमयाबी तो
हुस्न ए यूनुस पे से परदा उठा कर देख ले

☆.....☆.....☆

१६ फरवरी २००७

(लंदन)

मुहब्बत हूँ

.....☆.....

मैं मुहब्बत हूँ इश्क़ हूँ उसका
मैं तसव्वुर हूँ नक़्श हूँ उसका
मेरी सांसों में उसकी खुशबू है
मैं शजरे इश्क़ में खिलता गुलाब हूँ उसका
मैं हूँ इज़हारे हुस्न नक़्शे मुजस्सिम दिल्बर
मैं ही पैमाना रंगो बू हूँ उसका
बहरे वहदत में छुपा इश्क़ की तुग़यानी हूँ
मैं मचलते हुए क़ालिब का सकूँ हूँ उसका
मैं हूँ वादा वफ़ा नक़ाराए हुस्न आरा भी
इश्क़ में ग़र्क हूँ मैं अह्दे इश्क़ हूँ उसका
मुहीते रूह में इक इश्क़ बेक़रां हूँ मैं
मैं पंखुड़ी में छुपा समरे इश्क़ हूँ उसका
मुझ को ढूंढे है जहां सूरते इमकानी में
निशां से दूर मैं इक नक़्शे सफ़र हूँ उसका
उससे मिलते हैं यूनुस जो मिले रूख उनका
वो ही जौहर है निहां गोकि अयां नक़्श उसका

☆.....☆.....☆

१२ जून २००५

(लंदन)

यूँही बरसों

.....☆.....

मैं सिसकता रहा यूँही बरसों ..... और बिलकता रका यूँही बरसों
उनको पाने की दौड़ धूप भी की ..... पर तड़पता रहा यूँही बरसों
पास आकर वो दूर होते गए ..... देखता मैं रहा यूँही बरसों
उन को छूने की आरज़ू तो की ..... पर तरसता रहा यूँही बरसों
उनकी चाहत में दो क़दम ही चला ..... आह भरता रहा यूँही बरसों
इश्क़ क्या है फरेबे खुद गीरी ..... खुद से उलझा रहा यूँही बरसों
आह क्या है, निशां है ख़रमने इश्क़ ..... कसमसाता रहा यूँही बरसों
इश्क़ खुद सर है ज़िद का पक्का है ..... मैं तमाशा बना रहा बरसों
इश्क़ की गिरह रूह से लगती है ..... जिस्म रोता रहा यूँही बरसों
यूनुस उलझन की उलझनें क्या हैं ..... खुद को कोसा किया यूँही बरसों

☆.....☆.....☆

१८ अक्तूबर २००४

(लंदन)

साहिबे मंज़िल

.....☆.....

मैं तन्हा था या तन्हा रह गया हूँ ..... मुसाफ़िर था सफ़र में खो गया हूँ
सफ़र की आरज़ू ख़ानाबदोशी देगई है ..... मैं गुम राहे मुहब्बत हो गया हूँ
मुसाफ़िर था तो मंज़िल जुस्तजू थी ..... मैं मंज़िल के सेहर में खो गया हूँ
सफ़र करना है सारी उम्र तेरी राह गुज़र पर ..... इसी शाहरा पे मैं खो गया हूँ
मुनव्वर हो रही हैं दिल की शाहराहें वलेकिन ..... मैं चशमे आरज़ू में रो रहा हूँ
चलते चलते रहेंगे जानिबे मंज़िल ..... कि हमराह दम बदम है साहिबे मंज़िल
यह महफ़िल क्या है? तेरे गेसुओं की मुश्को अंबर
मुअ़त्तर कर रहीं हैं सांसें तेरी साहिबे मंज़िल
दिल मुश्किल है दिल की रोनकें और हासिले जां भी
मैं मुश्किल हूँ नहीं लेकिन रहा हूँ क़ालिबे मुश्किल
तबीयत में है बेताबी, सकूने जां नहीं मिलता ..... बोझ इस लाश का यूं ढ़ो रहा हूँ
परिंदे की तरह हर आशियां को छोड़ना है
तलाश जिस क़फ़स की है मैं उसी में सो रहा हूँ
आशियां आशियां उड़ता हूँ, तय करदह है यह ख़्वारी
इसी में खुश मेरा सैयाद है तो उड़ रहा हूँ
मेरा जीना नहीं जीना है उसका जो जिए मर के
मैं मर के आरोज़े ज़िन्दगी में मर रहा हूँ
भुला देता मैं यूनुस को अगर तू सामने होता
तेरी ख़ातिर ही यूनुस को अभी तक खो रहा हूँ
कोई आवाज़ आई है, पुकारा है क्या तूने?
इसी उम्मीद पर सुनसान राहें तक रहा हूँ
मैं गुम राहे सफ़र हूँ, ऐ शरीके सफ़र सुन ले
मेरी मंज़िल नहीं है, सूए मंज़िल खो गया हूँ
बहुत रोया मैं इस नादान दिल की हसरतों पर
मैं रोरो के बस अब चुप हो गया हूँ
बहुत जागा लेकिन आंखें बुझी जाती हैं यूनुस
कहीं वो ख़्वाब में आ जाएं मैं यूँ सो गया हूँ
कभी तन्हाइयों का दर्द भी हैरां है मुझ पर ..... कभी मैं खुद परेशान हो गया हूँ

☆.....☆.....☆

१४ जुलाई २००५

(दौरान ए सफ़र। दुबई ता लाहौर)

शाहे इश्क़

.....☆.....

मनम अदना गुलामे रियाज़ शाहे इश्क़ रियाज़म रा
परी पैकर हसीं मूरत मनम शैदा रियाज़म रा
हसीं नाजुक हैं पाए रियाज़ अज़ हुस्ने खुदावंदा
कि शाहे हुस्न हैं गौहर मनम आशिक़ रियाज़म रा
मेरे किरदार में मअ़कूस है किरदार तू यारम
मेरी गुफ़्तार में गुफ़्तार तू गूँजे रियाज़म रा
फिज़ाए रियाज़ का परतौ खुदावंदों की बस्ती है
कि सरदारे इलाही है मेरा दिल्बर रियाज़म रा
यही मक़सूदे हस्ती है यही दस्तूरे रियाज़ी है
कि सरकारे गौहा शाही में ज़म कर लो रियाज़म रा
कि तन्हा वाकिफ़े सिर्रो रमूज़े दिल्बरां यूनुस
मनम हस्तम कि यक शुद शौलाए इश्क़े रियाज़म रा

☆.....☆.....☆

१३ अक्तूबर २००४

(लंदन)

मक़सद हमारा गौहर

.....☆.....

मक़सद हमारा गौहर ..... मंज़िल हमारी गौहर
गौहर के गीत गाओ ..... जश्ने गौहर मनाओ
गौहर से जुदा हो कर ..... गुमराही है अंधेरा
शैतान का वार समझ ..... है पनाह हमारी गौहर
ज़िक्रे गौहर शमा है ..... रस्ता है हुब्बे गौहर
तन्हाइयों में गौहर ..... महफ़िल हमारी गौहर
ईमान हमारा गौहर ..... पहचान हमारी गौहर
उल्फ़त हमारी गौहर ..... फ़ितरत हमारी गौहर
नुसरत हमारी गौहर ..... मुहब्बत हमारी गौहर
गौहर बिना हमारी ..... वुक़अत नहीं ज़रा सी
उक़बा हमारी गौहर ..... दुनिया हमारी गौहर
यूनुस गौहर का प्यारा ..... लगाता है यही नारा
है जान हमारी गौहर ..... है शान हमारी गौहर

☆.....☆.....☆

३० नवंबर २००४

(दौरान ए परवाज़, बैंकाक ता दुबई)

मासिवा गौहर के सिजदा कुफ़्र है

मनम अदना गुलाम ए रियाज़
व मौला व रब्बी गौहर शाही

.....☆.....

मा सिवा गौहर के सिजदा कुफ़्र है
गर खुदा गौहर नहीं तो काफ़िर हूँ मैं
सर फिरा शायद कहे दुनिया मुझे
चुप नहीं रह सकता आज मैं
दीदे गौहर दर्असल है दीदे रब
कह रहा हूँ बरमला, सुन लो ज़रा
पाया गौहर मैंने अल्लाह को छोड़ कर
रब को छोड़ा तो मिला गौहर मुझे
सच बता दूँ तो बुरा तुम को लगे
झूठ कहना ज़िल्लतो रूसवाई है
मेरे दिल में आया है जब से गौहर
मेरा मज़हब दीदे गौहर शाही है
यूनुस बेकस तेरा मंगता गौहर
मांगना मेरे सिवा तो कुफ़्र है

☆.....☆.....☆

(पाकिस्तान)

मस्त निगाहे रियाज़ की मय

.....☆.....

मुन्दरजा ज़ेल अशआ़र बातस्दीक़े रियाज़, इमाम मेहदी गौहर शााही के लिए लिखे गए जिनको नुसरत फ़तेह अली ख़ान ने क़व्वाली की सूरत में गाया

मस्त आँखों की क़सम खाने का मौसम आ गया
अस्मते काबा को ठुकराने का मौसम आ गया
मुस्कुराता है कोई छुप छुप के दिल की आड़ में
आ गया, पी कर बहक जाने का मौसम आ गया
हो रहीं हैं जमअ़ः इक मरकज़ पे दिल की वहशतें
हमनशीं शायद बहार आने का मौसम आ गया

अ़ज़्दे रियाज़ की कहानी मुख़्बिरे रियाज़ की ज़ुबानी

इरफ़ाने रियाज़ के जो भी सिरबस्ता राज़ खोले गए
सिर्रे रियाज़ का जो भी सिरा मुतआ़रिफ़ कराया गया
हज़ूरीए रियाज़ की जो भी राह दिखाई गई
जामे रियाज़ के जो भी साग़र छलकाए गए
मस्त निगाहे रियाज़ की जितनी भी कसमें उठाई गईं
इश्क़े रियाज़ के जितने कुल्ज़ूम मफ़तूह किए गए
निगाहे नाज़े रियाज़ की जितनी नाज़िश उठाइ गईं
अहले नज़र, अहले कशफ़, अहले दिल, अहले बातिन, इनको झुटला कर दिखाओ!
फ़ख़्रे रियाज़ के जितने बहर सीनाए सीमाबे ज़फर
मिसले पसीनाए रियाज़ मुस्तग़रिक़ हुए
अ़ज़्दे रियाज़े क़सरे मन, मुख़्बिरे रियाज़ तन शुदम
तू मन शुदी मन तू शुदम ताकस न गोयद बाद अज़ां तू दीगरी मन दीगरम

लह्मुका लह्मुका, जिस्मुका जिस्मुका

न ही मंज़िलों का निशां कोई, न ही जल्वतों का गुमां कोई
न ही ख़िल्वतों का इम्तिहां कोई, न ही हलावतों का समां कोई
वो रियाज़ हुआ अ़ज़्दे रियाज़ अब
कि ख़बर है! मुख़बिरे रियाज़ अब
वो महर कि ख़बर ही है बन गयी
वो लहर कि बहर ही है बन गयी
तेरी अ़स्मतों का निशां हुआ
तेरे क़सरे मन का गुमां हुआ
क्या ख़बर कि वसीलाए सफ़र, हुआ अ़ज़्दे रियाज़ का इक सफ़र
कि वो मूनसे रूह जिन्से रियाज़, मुख़बिरे रियाज़ का इक क़हर
जिसे कोसते हो वो यहाँ नहीं, वो वहाँ है जहां की नहीं ख़बर
वो फ़ना हुए ज़ाते रियाज़ में कि जहां की तुम को नहीं ख़बर
झुटलाना चाहो तो करो काविशें, भले तुम हो कोई अहले नज़र
करो राबतें और झुटलाओ रियाज़, यही कशफ़े बातिल का है समर
वो जो दस्तगीरी के थे शहनशाह, बने तरफ़दारे निफाक़ अब
वो मुहम्मद था जो पनाह गज़ीं क़दमों में रियाज़ के आक़ अब
गौहर शाही डॉट कॉम को छीन लो, करो बातिनी क़ुव्वतें इस्तेमाल
अल्लाह मुहम्मद, सुल्तान बाहू की बड़ी क़ुव्वतें हैं बेमिसाल
जो वो कर सकें ख़त्म वेबसाइट, तो रियाज़ का फिर क्या कमाल हो?
रहे जारी फैज़े रियाज़ अगर, तो कहो कि रियाज़ का जमाल हो

☆.....☆.....☆

19.05.2003

मेहदी का साथ

.....☆.....

मेहदी का साथ देना है बढ़ते चलो बढ़ते चलो
मेहदी ने जल्द आना है उम्मीद से बंधे चलो
गोशा नशीं हुए अगर तो गोशाए उल्फ़त खुला
भर भर के जाम इश्क़ का मदहोश तुम होके चलो
मेहदी बिना इक सांस भी लेना अगर हराम है
मेहदी यहीं मौजूद है मेहदी के संग जीए चलो
इंसानियत को इश्क़ का पैग़ाम हम ने देना है
इश्के़ गौहर में डूब कर पैग़ाम ये देते चलो
इख़्लासे हुब तौहीद है, मुशरिक तेरा वजूद है
खुद को मिटाके इश्क़ से गौहर में तुम जीते चलो
सुसती उतार फेंक दो चुस्ती का वक़्त आ गया
इक नाराए रियाज़ से बरके़ सफ़र करते चलो
मुशकिल से खेलना है अब, हिम्मत का हो मुज़ाहिरा
अब दुशमनाने मेहदी से लड़ते चलो भिड़ते चलो
गौहर का साथ देना ही गौहर की मुहब्बत समझ
हुब्बे गौहर में मर मिटो गौहर के दीवाने चलो
गौहर को मेहदी मानना बरहक़ है पर फिर साथ दो
गौहर को मेहदी मान कर पस साथ तुम देते चलो
यूनुस वफ़ाए रियाज़ में हुब्बे गौहर का जाम दे
तुम अज़मते रियाज़ में मेहदी के गुन गाते चलो

☆.....☆.....☆

१५ अपैल २००४

(लंदन)

दिलबरी

.....☆.....

मेरा कोई शनासा नहीं है
कोई नज़रों को भाता नहीं है
कितनी दुश्वार थी ज़िन्दगानी
जैसे तैसे की मैंने बसर की
मुझ से पूछे हैं नामो निशान क्यूँ ..... मुझ पे करते हैं लानोतान क्यूँ
मैं शराराए इश्क़े निशान हूँ
क्या कभी मैंने इस में कसर की
क़ैदे ज़ुल्फ़े गौहर हल्क़ाए जां
मशग़लाए दिलम क़िब्लाए जां
कर रहा हूँ रक़म खूने दिल से ..... बात मंज़ूम हो या नसर की
ज़िन्दगी का निशान बंदगी है
बंदगी गौहरी बंदगी है
ज़िन्दगी ऐसी क्या ज़िन्दगी है
जो न इश्क़ ए गौहर में बसर की
दिलबरी दिल में दिलबर से साबित ... शायरी हुस्ने गौहर शाही से साबित
हक़ परस्ती हक़ायक से मोहकम
सच वही जिस में तलक़ीं सबर की
रूह सिसकती है दिल जल रहा है
जान रोती है क्या हो रहा है
दीद मुझ को अता हो गौहर अब ..... दिल को आदत नहीं है सबर की

☆.....☆.....☆

८ जनवरी २००५

मैं क्या चाहता हूँ

.....☆.....

मुहब्बत की हर सू फ़िज़ा चाहता हूँ
नफ़रत के दर से विदा चाहता हूँ
जहां के शबो रोज़ हों इश्क़ आमेज़
मैं कुंजे मुहब्ब्त की राह चाहता हूँ
कोई ज़ुल्फ़ मुशके मुहब्बत से महके
मैं इन गेसुओं में पनाह चाहता हूँ
नहीं याद मुझ को सिवाए मुहब्बत
मैं क्या मांगता था मैं क्या चाहता हूँ
मुझे सांप बन के डसे है ये नफ़रत
मैं इन दुश्मनों से पनाह चाहता हूँ
मुहब्बत तरन्नुम मुहब्बत अदा है
मुहब्बत मुजस्सिम बना चाहता हूँ
मुहब्बत का भूका मुहब्बत का प्यासा
जामे मुहब्बत पिया चाहता हूँ
मुहब्बत है नापेद जिन्से जहां में
मैं बीमारे उल्फ़त मरा चाहता हूँ
खुदा से मुहब्बत तो करते है लाखों
मैं इंसां में उल्फ़त वफ़ा चाहता हूँ
ग़रज़ी मुहब्बत मुहब्बत नहीं है
मैं गौहर तेरा सामना चाहता हूँ
तेरे इश्क़ की इनतेहा चाहता हूँ
मेरी सादगी देख मैं क्या चाहता हूँ

☆.....☆.....☆

१३ जनवरी २००८

(लंदन)

रियाज़ुल जन्नाह के राजा

.....☆.....

रब्बुल अरबाब रा रियाज़ हैं मालिक हमारे
रियाज़ुल जन्नाह के राजा रा गौहर हैं ख़ालिक़ हमारे
मुहम्मद मुस्तफ़ा का सर झुका तो तुम ने उठाया
अल्लाह पे पेश मुश्किल आई एहसान तुमने चढ़ाया
मौलाए कुल रियाज़े गौहर शाही मरहबा बेकुम
लक़ब मेहदी का नसरूल्लाह लोगों कुरान में आया
इस्मे रियाज़ "**अलरा**" कुरान पे छाया
तुम्हारे हुस्न से चंदा को रौनक़ तुमने है बख़्शी
ज़ियाए रियाज़ से सूरज को रौनक़ तुम ने है बख़्शी
मौलाए कुल रियाज़े गौहर शाही मरहबा बेकुम
गौहर शाही ने सिर्रे अल्लाह दुनिया को है बताया
हमें ज़म करके ग़ैबी आ़लम का रस्ता है दिखाया
इलियास, इदरीस, ईसा भी जहाने ग़ैब से आए
ये राज़ हम को हमारे प्यारे गौहर ने बताया
मौलाए कुल रियाज़े गौहर शाही मरहबा बेकुम
क़ल्माए सबक़त "**ला इलाहा इल्ला रियाज़**" है बरहक़
कि जिस का मुंतज़िर अल्लाह भी क़रनों से रहा बेशक
हज्रे अस्वद में जिनकी सूरत मुहम्मद (स०) ने भी चूमी
यही तस्वीरे गौहर शाही बैतुल्लाह की ठहरी खूबी
मौलाए कुल रियाज़े गौहर शाही मरहबा बेकुम
जाफ़रे सादिक़ बोले चाँद पे तस्वीरे मेहदी है
है सूरत जिस की लोगों सुन लो वही ज़ाते मेहदी है
नज़रे रियाज़ अरवाह को ज़ाते रियाज़ में पाले
एम एफ़ आई लोगों के दिल में जुस्तजूए "**रा**" डाले
मौलाए कुल रियाज़े गौहर शाही मरहबा बेकुम
जश्ने रियाज़ है उरूसे मेहदी सेहरा सजाया
नज़रे रियाज़ है उरूसे रूही चेहरा समाया
क़ल्बे यूनुस को हासिल हो गई सोहबते गौहर
रूहे यूनुस को अक्से रियाज़ से है नुदरते गौहर
मौलाए कुल रियाज़े गौहर शाही मरहबा बेकुम

☆.....☆.....☆

२५ नवम्बर २००६ (लंदन)

मुश्के रियाज़

☆.....☆.....☆

मुशके रियाज़ रूह में फैली है इस तरह
जैसे नसीमे रियाज़ कि चंबेली हो जिस तरह
सांसों में वो गुल पोश समाया हुआ है यूँ
जैसे चमन में रूह सहेली हो जिस तरह
नरमी लबों की मात दे रेशम की लचक को
यूँ ख़म है गेसुओं में पहेली हो जिस तरह
शोख़ीए दिल को पर लगे इश्के़ रियाज़ के
नाज़िश उरूस ऐसा कि नवेली हो जिस तरह
अंदाज़े गुफ्त धीमा यूँ कि दिल की सुने है दिल
सौते सुरीर ऐसा कि सुरीली हो जिस तरह
लोगों को अभी अंदाज़े सोहबत नहीं यूनुस
दोश हवा फिरे है अकेली हो जिस तरह
ऐसे छुपाया उसने हुस्ने हया को
ऐसे कि इश्क़ खुद से भी शरमीली हो जिस तरह

☆.....☆.....☆

३१ दिसम्बर २००६

(बैंकॉक)

मोलाए कुल मेहदी अल्मुंतज़िर रा रियाज़ गौहर शाही मरहबा

☆.....☆.....☆

मिन्जानिबे जाने मन गौहर शाही.....नया कलाम

.....☆.....

न बचा ख़रमने ईमान को कि बटता है यहाँ फैज़ाने रियाज़
खुल जाएंगी बाछें तेरी, पड़ेगी जब ज़ुलफ़ाने रियाज़
हो जाएगा तू भी हमसर यूनुस, जब बन जाएगा दिल में मकाने रियाज़
फिर अल्लाह को भी होगी हैरत कि कैसा है ये ग़ैबी इंसाने रियाज़
मरते मरते जीता है और जीते जीते बनता है,
पड़ती है जब सूरत रूह पर क़ुरबाने रियाज़
आजा देख ले रूहे यूनुस कि यही है इस दौर की बुरहाने रियाज़
न समझना कि यह कलाम इंसानी है, बहुत दूर से आया है लाफ़ानी है
शकलो अमल से लगती यह सूरत इंसानी है,
रहमानी ऐसी कि अल्लाह को भी हैरानी है
यूनुस तो बंदा ही है, पर बातिन में गौहर की निशानी है
न माने जो उस का क़ौल वो करता गौहर की नाफ़रमानी है
ये, ये नहीं ये वो है, जो था नहीं पर होने की निशानी है
रंग जाऐंगें तुझे एक ही नज़र में, अगर ख़लूस से गौहर की ठानी है
चढ़ेगा फिर तुझ पर भी रंगे गौहर,
कहेंगे नादान लोग ये बशर है या लाफ़ानी है
बंदाए गौहर क्या है बस इतना ही कि
सूरत है बशर की गौहर की हुक्मरानी है

☆.....☆.....☆

११ फरवरी २००७

(लंदन)

अज़मत मेरे गौहर की

.....☆.....

न दबा सकेगी दुनिया अज़मत मेरे गौहर की
न बयां में ला सकेगी मिदहत मेरे गौहर की
गूँजेगा हर जहां में अब इस्मे रा रियाज़म
देखेगी सारी दुनिया क़ुदरत मेरे गौहर की
जो मुंकिरे वफ़ा हैं वो मुंकिरे खुदा हैं
मेरी वफ़ा में मुज़मिर निस्बत मेरे गौहर की
इश्क़े गौहर इबादत मंज़िल है ज़ाते गौहर
छोड़ो खुदा को पाओ क़ुरबत मेरे गौहर की
अ़क़बे खुदा से आए दीने खुदा हैं लाए
बतलाई है गौहर ने नुदरत मेरे गौहर की
नबियों को फैज़ देना अल्लाह की लाज रखना
लुतफ़ो करम ही करना फ़ितरत मेरे गौहर की
ये ज़िन्दगी गौहर की धड़कन पे उनका क़ब्ज़ा
इस दिल का है तराना अज़मत मेरे गौहर की
इश्क़े गौहर से अफ़ज़ल दीने खुदा नहीं है
गौहर में जी रहा हूँ इनायत मेरे गौहर की
तालिब को रब की उल्फ़त भटके हुए को जन्नत
मेरे लिए है काफ़ी मुहब्बत मेरे गौहर की
हर रूह में इश्क़ दाखिल हर दिल में रब हो हासिल
इंसां हो रब से वासिल चाहत मेरे गौहर की
दीने खुदा में इंसां दाखिल यूँ हो रहे हैं
जैसे कि खुद खुदा हो रिआ़यत मेरे गौहर की
वो शम्से रियाज़ जो कि मग़रिब से मुत्तलअ़ हो
आई जहां पे छाई जल्वत मेरे गौहर की
शरमिंन्दगी में डूबा मुहम्मद का सर उठाया
अल्लाह का भरम रखना सख़ावत मेरे गौहर की
मेहदी का भेस भर के इंसाँ को है जगाया
मुरदों को ज़िंदा करना आदत मेरे गौहर की

☆.....☆.....☆

२५ अगस्त २००६
(श्री लंका)

अज़ गौहर ग़ाफिल मुबाश

.....☆.....

न हो मायूस, पुर उम्मीद रह गौहर को आना है
संभल जा लड़खड़ाने से अभी वादा निभाना है
नशा ज़ुल्मत का है, ज़ालिम को इस में ग़र्क रहने दो
हमें बेदार दिल में शम्माए गौहर जलाना है
जुदाई का क़हर उस दिल पे आता है जो ख़ाली हो
तुझे महरूख़ गौहर इस ख़ानाए दिल में समाना है
हिजर में जल्वाए गौहर सहारा दिल को देता है
इसी जल्वाए गौहर को तुम्हें दिल में बसाना है
दिले गौहर से जो पेवस्ता है वो दिल नशेमन है
उसी दिल पर समझ रखो गौहर का आशियाना है
क़यामे जुस्साए गौहर दिले साबित दलीले हुब
ज़मे गौहर दलीले इश्क़ पस रूह का ठिकाना है
गौहर शाही से क्या निस्बत मज़ारे मुंसलिक को है
बमाए जिस्म दोबारा गौहर शाही को आना है
गौहर के जिस्मे नूरी से भला क्या निस्बते रिश्ता
पिदर कैसा? पिसर क्यूँकर? वहां सूरत बहाना है
वो जिस्मे गौहरी मिसले गुलाबे चमन वहदत है
वो रूहे अहमदी का जिस्मे गौहर में समाना है
वो जिस्मे मरमरी नाज़ुक तरीन अज़ लालाओ गुल है
वो शजरे नूर की कोंपल से निकला इक फ़साना है
वो जिस्मे अंबरीं मकतूबे इस्माए इलाही है ... वजूदे नूर से मामूर है नूरी तराना है

वलेकिन जिस्मे गौहर पर नहीं मोक़ूफ़ हक़ उनका
वजूदे रियाज़ की सूरत अलग जो माशूक़ाना है
अदाए इकतिसाबे इश्क़ अल्लाह इक वसफ़ उन का
वलेकिन इश्क़े ज़ाती की अदा भी दिलबराना है
ये ग़ैबत चादरे बातिन है जो ओढ़ी है शानों पर
अदाए बेरूख़ी से हुब्बे क़ल्बी आज़माना है
जिन्हें तौफ़ीक़ है वो मुंतज़िर है हुब्बे कामिल से
उन्हीं के वास्ते रूख़ से उन्हें परदा उठाना है
मन ईं हक़ अज़ गौहर शाही शुनीदह अम ..... ईं राज़ बगुफ़्तन नमी आयद
अगर मी जस्ती, मी याफ़्ती! मन मुश्ताक़ जमाल रियाज़ हस्तम
मज़ारे बेमहल की इज़्ज़तो तौक़ीर कैसे हो?
दिल आज़ारी व गुस्ताख़ी का जब ठहरा निशाना है
ज़ुबान इक़रारे ग़ैबत में तो दिल मायल फ़ना पर
निफ़ाक़ो कुफ़्र की तबलीग़ का ये शाख़साना है
वही मुर्शिद, वही दिल्बर, वही दिल्दार है यूनुस
कि जिसके जल्वाए रूख़सार से दिल सनम ख़ाना है
गौहर रा याद कुन ..... ऊ सरमाया सआ़दत अस्त

☆.....☆.....☆

१२ दिसंबर २००३

(लंदन)

नामे गौहर है प्यारा

.....☆.....

नामे गौहर है प्यारा, गूँजा है दिल हमारा
नक़्शे गौहर है छाया, दिल पर है इसका साया
तुम भी पुकारो गौहर गौहर कहे मैं आया .... दिल्बर उसी का गौहर जिस दिल में गौहर आया
जो साथ है हमारे उस ही ने गौहर पाया
बतला दें राज़े गौहर जो दिल से सुनने आया
ये है सदाए गौहर, यूनुस ने गौहर पाया .... तुम भी बसा लो दिल में गौहर कहे मैं आया
माशूक़ हूँ मैं सब की, गौहर गौहर का साया
दिल्बर रियाज़े जानम, रियाज़म रियाज़ रा रा
मैं हूँ नदीमे रियाज़म, गौहर का हूँ मैं जाया .... ये कैफ़ है तुम्हीं से, महफ़िल में गौहर आया
महफ़िल में लाओ सब को पैग़ामे गौहर आया
यूनुस नहीं गौहर है जिस का रंग है छाया
परदे उठाओ देखो गौहर गौहर समाया .... महफ़िल बता रही है वो बे नक़ाब आया
उर्यानियां गौहर की कहती हैं हम से यूनुस
मदहोशियां हैं फैलीं ऐसा नशा है छाया
गोशा नशीनीं में भी उरियां रहा है गौहर .... गौहर गया ही कब था जो आज गौहर आया
गौहर के हैं नज़ारे मिलते हैं ये इशारे
आँखें खुली रखो तो गौहर है नज़र आया
पैमानाए गौहर है हुब्बे गौहर ऐ लोगो .... जामे रियाज़ थामो, साक़ी ने है फ़रमाया
गौहर रियाज़े गौहर, जानम रियाज़े जानम
गहराइयों में रूह की नामे रियाज़ आया
इश्क़े गौहर में खोकर हम ने गौहर को पाया .... चश्मे रियाज़ पाई रिंदों को चैन आया
गौहर गौहर है हरसू, ऐसा नशा है छाया
नामे गौहर का सदक़ा महफ़िल में रंग लाया
ये है निदाए क़ल्बी हर दिल में गौहर आया .... हम ने पुकारा गौहर वो देखो गौहर आया
माथे को चूमा उसने सीने से फिर लगाया
तलवों को बोसा देकर आदाब बजा लाया
फिर मुस्कुरा के बोले देखो दीवाना आया .... क़दमों में तेरे जीना जल्वों में तेरे खोना
तेरा करम है गौहर कि बज़्म में तू आया
जब भी जुबां है खोली तेरा ही नाम आया
मेरी तो दुनिया तू है तेरा करम है छाया .... हुब्बे रियाज़े गौहर मेरा है कुल सरमाया

☆.....☆.....☆

२५ मार्च २००५
(अमरीका)

पाए गौहर

.....☆.....

निक़ाब डाल कर चलना हमें रातों ने सिखाया
चमक आँखों में आई क्यूँ हमें तारों ने बताया
उदासी बैठ कर रोती रही चहरे पे हमारे
तुम्हारे लम्स की गरमी ने हमें खुद से मिलाया
जुनूँ हुआ चिराग़े राह, बनाया इश्क़ को रहबर
मिली यूँ राहे गौहर, राज़े इश्क़ हम ने यूँ पाया
ये पैशानी यूंही टिकी रहे बस पाए गौहर पर
यही है अज़्म मेरा और यही है मेरा सरमाया
ग़ैर से ग़ैर मिले, हम तो मिलें अपनों में
हम्ही में हम से मिलो, बस यही गौहर ने फ़रमाया

☆.....☆.....☆

२८ जून २००६
(लंदन)

पास आते हो

.....☆.....

पास आते हो दूर जाने को
दूर जाते हो दिल जलाने को
क्या तड़पना ही है तक़दीर मेरी?
क्या सुलगना है इश्क़ आने को?

दूरियां धोका है तो मेरी हक़ीक़त क्या है
क़ुरबतें रूहे बकफ़ मिलतीं हैं बिछड़ जाने को
उनकी आमद पे है सैलाबे रवां आँखों में
अश्के जां साज़ है इस दिल के मचल जाने को
इश्क़ की आराई है दिल की उरूस है रंगीन
कौन जानेगा अ़बस तेरे बिखर जाने को
ये दिल तबाह ही सही इश्क़ की बक़ा तो है
क़ज़ाए इश्क़ लिए इस रूह के संवर जाने को
दिल नशीं दिल की ज़ौक़ आराई का मंम्बा तू है
अब मेरा कासाए दिल तर है निखर जाने को
तेग़े रज़ाए यार से ख़ूं आलूदा हुआ दिल
अब तो क़ज़ाए यार का पैग़ाम है मर जाने को
घोंसले खाली हुए और परिंद उड़ते हैं
अब के तड़पा है ये परिंद तो घर जाने को
सनम से दूर सनम ख़ाने में रखा क्या है
सनम कदा है सनम तेरे सनम ख़ाने को
ऐसी बेबाकी कहाँ मेरा मुक़द्दर बनती
जो न समझता अगर तू मेरे मर जाने को
दिल की दोज़ख में गुनहगारे इश्क़ उरियां है
गुनाहे इश्क़ पर मायल किया दीवाने को

मिटा के नामो निशां मेरा निशां ढूंढ़े है
मुझी में मिटता है मिटता रहे मिट जाने को
दमे हमदम से हुआ भेद ये नमनाक अलम
कोई जाता है अ़दम और कोई आने को
बुत कदा आरज़ुओं का वफ़ाओं का जला डाला
अब न यूनुस न कोई आह है हुछ पाने को
खुद बखुद, खुद नुमां, खुद साख़ता, खुद बीं, खुद जां
दिल तड़पता है मेरा खुद से गुज़र जाने को
आ ज़रा देख मेरे दिल की राख तकती है
तेरी राहों में तेरे आज गुज़र जाने को
ज़िन्दगी कब की है मायूस मौत मौत हुई
सज रहा है दिल बेजान तेरे आने को
ज़िन्दगी से है जड़प और दिल मुरदार ख़तम
कौन कहता है तड़पता है तुझे पाने को
क़ल्बे बिसमिल की नवा तेग़े जफ़ा और चला
हाथ कांपें हैं तेरे दिल के फड़क जाने को
शिकस्ता क़ब्र है गोया मिज़ारे मन की मुराद
कफ़ने आरज़ू में दफ़्न हुआ कोई तुझे पाने को
ले चला और चला और चला तेग़े क़ज़ा
दिल तेरी याद में ढलता है अब छुप जाने को

☆.....☆.....☆

२ फरवरी २००४

(भोरबन। पाकिस्तान)

तेरी याद

.....☆.....

फिर तेरी याद पे पहरा लगा दिया तूने
फिर मुझे हसरते एहसास भुला दिया तूने
मैं चाहता हूँ तेरी याद हो तन्हाई हो
अश्क बारी हो तेरे लम्स की गरमाई हो
यूँ तड़पता रहूँ और शामे ज़ीस्त ढल जाए
फिर नई सुबह तेरी दीद से शरमाई हो
दराज़ गेसू तेरे राहते जां में
हसीन लबों पे तेरे मेरी ही रुबाई हो
तेरी निगाह मेरे साक़िया क़यामत है
न आए होश कभी तू ने जो पिलाई हो
मेरी तो ज़ीस्त परस्तिश से है मख़मूर तेरी
खो जाऊँ तुझ में यूँ जान में जान आई हो

☆.....☆.....☆

१६ मार्च २००४

(दौरान ए परवाज़। अमरीका)

मालिके रियाज़ुल जन्नाह

.....☆.....

रियाज़ुल जन्नाह के मालिक को बेहद सजूद
हिस्से इदराक से बाला है उन का वजूद
इन को शैतान ने घेरा है मज़लूम हैं
तू ही हाकिम है गौहर, हम महकूम हैं
इन दिलों की भी इमदाद कर दीजिए
तेरे बंदे हैं गौहर ये मासूम हैं
रियाज़ुल जन्नाह के मालिक को बेहद सजूद
हिस्से इदराक से बाला है उन का वजूद
मुझ को हिम्मत दे इन को निभा मैं सकूँ
इन की आफ़ात पर चुप रहूँ सह रहूँ
इन को फ़हमो फ़रासत अ़ता कीजिए ..... ताकि तालीमे मेहदी सिखा मैं सकूँ
तेरे मंगते तेरे आरज़ू मंद है ..... ख़ल्क़ गुमराह हुई रह गए चंद हैं
तेरे लुत्फ़ो करम का अहाता हो अब ..... तेरा दर है खुला, बाक़ी सब बंद हैं
नफ़्स की तत्हीर इन सबको भारी लगे ..... इन के ईमान पे ज़र्ब कारी लगे
इनको इदराक तत्हीर हो अब अता ..... इन दिलों पे नज़र अब तुम्हारी लगे
तेरे बंदे की अज़ हद दुआ है यही ..... इनपे करदे करम कि तेरी अदा है यही
कुव्वते सब्र मुझ को अ़ता कीजिए ..... मेरे मालिक मेरी इल्तिजा है यही
हामिले अ़क्से रियाज़ी की नेअ़मत मिली ..... दौरे ग़ैबी में भी नज़रे गौहर मिली
लह्ने रियाज़ी सुना बुए गौहर मिली ..... हामिले अक्से रियाज़ी पे बेहद दुरूद

☆.....☆.....☆

१० नवम्बर २००६

(लंदन)

रोक दे धड़कन इस दिल की

.....☆.....

इस ग़ज़ल की ख़ुसूसूसियत ये है कि यह ग़ज़ल सरकार के जुस्साए मुबारक ने लिखी है अगर किसी को सरकार के दर्द की तलब है तो ये ग़ज़ल पढ़े

बाबा फरीद के इस शेर से माख़ुज़ :

कागा सब तन खाइयो, मेरा चुन चुन खाइयो मास
दो नैनां मत खाइयो, इन्हें पिया मिलन की आस

रोक दे धड़कन इस दिल की, जो तेरी याद न होवे
छीन ले नूर इन आँखों का, जो तेरी दीद न होवे
प्रीत का बंधन मन का मिलन है, मिलने को दिल रोए
दर्द आँखों का आंसूं जाने, काहे आँख न रोए
दास बनाओ मोरे मन को, देवता बन बन आओ
रोम रोम में बस जाओ, मोरा तन मन गौहर होवे
ऐ दुनिया के लोगों! मुझ को चुन चुन ज़ख़्म लगाओ
दिल को ज़ख़म न देना मोरे दिल में गौहर रहवे
अल्लाह अल्लाह कहते कहते सूख गई है जुबान
यक बार जो रियाज़ कहावे पल में आशिक़ होवे
रियाज़ जपो मन की माला में सिमरन संगत होवे
मानो कहना यूनुस का जो मन को ढारस होवे

☆.....☆.....☆

१८ सितंबर २००४
(शारजा)

मैं यह ग़ज़ल हाफ़िज़ नदीम सिद्दीक़ी को बख़्शता हूँ, उनको बाद में पता चलेगा कि ग़ज़ल को बख़्शने का क्या मतलब होता है

गौहर तेरे लिए

.....☆.....

सब को प्यार देता रहा, बस गौहर तेरे लिए
सब के वार सहता रहा, बस गौहर तेरे लिए
सारे मुझ से नाराज़ हैं, सब ही मुझ से बेज़ार हैं
खून के आँसू पीता रहा, बस गौहर तेरे लिए
लोग दूर होते गए, मुझ से तंग पड़ते गए
मैं सदाएं देता रहा, बस गौहर तेरे लिए
क्या मैं तेरा बंदा नहीं, इश्क़ मेरा धंदा नहीं?
क्यूँ मैं ठोकर खाता रहा, बस गौहर तेरे लिए
मुझ को सब ने तन्हा किया, मुझ को सब ने रूसवा किया
रोज़ जीता रहा रोज़ मरता रहा, बस गौहर तेरे लिए
तू ही इंसाफ कर, दिल की हिकमतें आम कर
सब के दिल लुभाता रहा, बस गौहर तेरे लिए
क्या मैं बेवफ़ा शख़्स हूँ, क्या मैं बेहया शख़्स हूँ?
सब के ताने सुनता रहा, बस गौहर तेरे लिए
अब सकत मुझ में नहीं, अब जिस्म में ताक़त नहीं
मर गया पर जीता रहा, बस गौहर तेरे लिए
जिस को मैंने अपना कहा, जिस को मैंने दिल में रखा
उसके नाज़ उठाता रहा, बस गौहर तेरे लिए
किससे हाल ए दिल मैं कहूँ, किसको अपना हमदम कहूँ
तन्हा जीता मरता रहा, बस गौहर तेरे लिए
उस नाज़नीं को भला कैसे मैं दिलाऊँ यक़ीन?
सब से बात करता रहा, बस गौहर तेरे लिए
क्या मेरी औक़ात है मुझ से प्यार करे कोई
सब मुहब्बत करते रहे, बस गौहर तेरे लिए
मेरे मालिक कर दो करम, अपनों से न हो अब सितम
हर सितम सहा है सनम, बस गौहर तेरे लिए
गौहर! मुझ में हिम्मत नहीं, आँखों में चमक वो नहीं
कह दो क़ल्बे यूनुस है वक़्फ़ बस गौहर तेरे लिए

☆.....☆.....☆

३१ अगस्त २००४
(शारजा। सुबह ७ बजकर ४५ मिनट पर)

सोहबते यूनुस

.....☆.....

सोहबते यूनुस में जो आए
रियाज़े गौहर शाही को पाए, मस्त बनाए
जो भी यहाँ झोली फैलाए .... दिल में उस के गौहर आए
और फिर वो यह कहता जाए .... सोहबते यूनुस में गौहर को पाए
यूनुस जहां पर जब भी जाए .... ज़ुल्फ़े गौहर खुशबू फैलाए
देखें यूनुस को लोग अगर तो .... नज़र मगर गौहर ही आए
बोलो गौहर तो यूनुस आए .... यूनुस कहो तो गौहर आए
क्यूँकि यूनुस में नामे गौहर है .... नाम है जिसका वो ही आए
गौहर आएंगे शान से अपनी .... शाने गौहर जो समझ न आए
क्या देखोगे चेहराए गौहर .... चेहराए गौहर रब को भाए
क़दमों में उनके अल्लाह होगा .... और मुहम्मद पंखा झलाए
फिर ढूँडोगे यूनुस को तुम, यूनुस मगर फिर नज़र न आए,
गौहर में ही छुपता जाए

☆.....☆.....☆

१३ सितंबर २००६

(आस्ट्रेलिया)

सूरते गौहर

.....☆.....

सूरते गौहर में खो जाया करो
ज़िक्रे गौहर से सकूं पाया करो
मैं सुनाऊँ दासताने इश्क़े रियाज़
ख़्वाब में गौहर तुम आया करो
छेड़ दूँ जब ज़िक्रे जुल्फ़े यार तो
तुम क़सीदाओ ग़ज़ल गाया करो
तन्हा तन्हा जीना क्या जीना है यार
मेरी हस्ती में उतर जाया करो
मेरी आदत है तुम्हीं को देखना
तुम भी मुझ को देखने आया करो
कब से बैठा हूँ तुम्हारी आस में
आओ यूँ कि फिर न तुम जाया करो
क्या इसी को इश्क़ कहते हैं गौहर
मैं तुम्हें देखूँ तो शरमाया करो
इस तबस्सुम खेज़ ज़ालिम सी अदा
यूँ न हम को रोज़ तड़पाया करो
बस यही दिल का तक़ाज़ा है गौहर
मैं पुकारूँ तुम को, तुम आ जाया करो
क्यूँ नहीं यूनुस को अपनी भी ख़बर
तुम ही आ कर इस को समझाया करो

☆.....☆.....☆

यकम सितंबर २००४

(शारजा। सुबह ४:३०)

ता नज़्अ़

.....☆.....

ता नज़ा तेरा इंतेज़ार रहा

फिर न आँखों को ऐतबार रहा

हिजर के लम्हे और सालों की गिनती भी चलती है

मरहला ज़ीस्त हर लम्हा बे क़रार रहा

तेरी हमराही मेरे जिस्म पर भी उरयां है

फिर भी हर लम्हा तेरा बंदा अश्कबार रहा

तू ने कुछ इस तरह रूह को लुभाया कि

न खुद का होश न तेरा भी इंतेज़ार रहा

ये शनासाई है तुझसे कि खुद हूँ बेगाना

मैं नहीं, तुझ को भी आप तेरा इंतेज़ार रहा

☆.....☆.....☆

१६ मई २००४

(लंदन)

तेरी हम्द

.....☆.....

तेरी हम्द करता बयां कोई ..... तो वो करता जो तुझे जानता
तुझे इश्क़ करता अगर कोई ..... तो वो करता जिसे तू चाहता
न मेरी नवाह़ में वो शोख़ियां ..... न मेरी सना में वो आजिज़ी
तेरा मद्ह सरा कोई होता अगर ..... तो वो होता जिस में तू झाँकता
मैं क़रीब फ़रेबे कुफ़्र हूँ ..... दास्तान मेरा हाले कुफ़्रे अज़ीम कहां
तेरा हुस्न करता बयां कोई ..... तो वो करता जो तुझे देखता
न ज़ुबां है जिन्से वतन मेरी ..... न फ़हम है हिस्साए अदब मेरा
तेरी आरज़ू करता जो दिल कोई ..... तो वो करता जो तुझे मानता
जिसे मौत है क्या वो ज़िन्दगी ..... मेरी मौत है मेरी ज़िन्दगी
यूँ हयात पाता अगर कोई ..... तो वो पाता जिसे तू मारता
तुझे क्या ग़रज़ है सुजूद से ..... तू वरा है हर इक हुदूद से
तुझे राज़ी करता अगर कोई ..... तो वो करता जो तुझे भांपता
तुझे देखना अ़बूदियत ..... तुझे सोचना है मुराक़िबा
तेरे दिल में करता जो घर कोई ..... तो वो करता जो तुझे सूंघता
मेरी चश्मे नम की थी जुस्तजू ..... थी शिकस्ता दिल की तू आरज़ू
तुझे देखता अगर कोई ख़िफ़्ता जां
तो वो तेरी आँखों से देखता
न मुझे करीनाए इश्क़ है ..... न मुझे सलीक़ाए गुफ़्तगू
यूनुस तुझे प्यार करता अगर
तुझे सोचता तुझे देखता, तुझे जानता तुझे मानता

☆.....☆.....☆

२००६
(लंदन)

लुत्फ़े गौहर शाही

.....☆.....

तेरी महफ़िल में गुनहगारों की बन आई है
हम स्याह कारों का मुर्शिद भी गौहर शाही है
तेरी निस्बत ही मेरे दिल की हयाते अबदी
तेरी नज़रें ही मेरा दीनो पारसाई है
मेरे गौहर तेरी ज़ुल्फ़ों के मैं वारी जाऊँ
तेरी सूरत में सिर्रे हक़ की रोनुमाई है
मैं तो इंसान हूँ हाँ मेरी हक़ीक़त क्या है
तेरी सूरत पे खुदा खुद भी तो शैदाई है
या गौहर विर्द है नबियों का और वलियों का
मैं कहूँ या गौहर तो कैसी ये दुहाई है
मैं तो मुजरिम हूँ ख़ता कार हूँ नाकारा हूँ
तेरी निस्बत से मेरी जान में जान आई है
मैं अ़ब्दे रियाज़ हूँ तालिब हूँ उनकी उल्फ़त का
मेरा तरीक़े असल लुत्फ़े गौहर शाही है
यही है समरे फ़ुग़ां तरीक़े फ़क़ीराई है
दिलू यूनुस ने इसी से ही नमू पाई है

☆.....☆.....☆

१९८७

(कराची)

अब्रे ज़ुल्फ़े यार

.....☆.....

तेरी ज़ुल्फ़ों में सिमट जाने को जी चाहता है
कुन्जे तन्हाई में छुप जाने को जी चाहता है
हर तरफ़ धूप है नफ़रत की तपिश फैली है
तेरी बाहों से लिपट जाने को जी चाहता है
नफ़रतें आ़म हुईं इश्क़ है ग़रीबुल्वतन
हम हैं परदेस में घर जाने को जी चाहता है
तूने खोले तो रखे होंगे दरीचे घर के
पस किसी वक़्त गुज़र जाने को जी चाहता है
न तेरी दीद है बाक़ी न घना सायाए ज़ुल्फ
किसका इस दुनिया में रहने को जी चाहता है
आह, वो सायाए गेसू जो मयस्सर था कभी
फिर वही अब्रे ज़ुल्फ़े यार हो जी चाहता है
अब न गरमी है तेरे लम्स की न मुश्के बदन
फिर बग़लगीर हों दिलबर से ये जी चाहता है
क्या तुझे याद है यूनुस भी है तेरा बंदा
तुम कहीं भूल न जाओ ये जी घबराता है

☆.....☆.....☆

८ जुलाई २००४

(लंदन)

गौहर शाही

.....☆.....

तू फ़क़्रे मुहम्मद है रब भी तेरा शैदाई
तेरा जिस्म है नूरानी और रूह तेरी मौलाई
तू साहिबे फ़क़्रे नबी तू आ़रिफ़े ज़ाते खुदा
तू मिम्बरे दीने मुबीं ऐ रियाज़ गौहर शाही
तेरी ज़ात से क़ायम है इस दीन की रअ़नाई
तेरा काम मसीहाई तेरा नाम गौहर शाही
तू हामीए फ़क़्रे नबी तू दायीए दीदे खुदा
तू साहिबे इज़्ने खुदा तेरी शान किबरियाई
तू साहिबे बैते नबी तू शाहिदे ज़ाते खुदा
मशग़ूले खुदा हर दम है ज़ाते गौहर शाही
आजिज़ है अरे यूनुस लफ़्ज़ों की पैराई
कहाँ तेरा क़लम नाक़िस कहाँ शाने गौहर शाही

☆.....☆.....☆

१९८८

(पाकिस्तान)

प्रेम का भगती

.....☆.....

तू ने आँख क्या लगाई जग में हो गई रूसवाई
मेरी जां हल्क़ को आई मच गई आलम में दुहाई
तेरी उल्फ़त ऐसी छाई जैसे काली घटा बर लाई
मेरे सीने में समाई तेरी ज़ुल्फ़ों की गहराई
मेरी धड़कन नाचे पलपल तेरी बाहों की इठलाई
मेरे नैनां जग भर ढूंड़े तेरी सूरत गौहर शाही
तेरे लब हैं रस के प्याले जिस के हो गए हम मतवाले
रहना दिल में ऐ दिल वाले, खोलो बाहों के तुम हाले
हम है तेरे चाहने वाले हम को सीने से लगा ले
हम को तेरी ही तमन्ना, काश कि तू भी हम को चाह ले
मौसम आए दुख कि साजन लौट गई तेरी आज सुहागन
तू ने जिस का भाग सजाया, दुनिया उस को कहे अभागन
तेरी दीद है मन का चंदन, दुख में जलके हो गया कुंदन
जल जल आग लगाए उलझन, बरसा प्रेम रूत का सावन
यूनुस तुमरे प्रेम का भक्ती, दे दो इस को जीवन मुक्ती
कौनो ऐसी भाषा बोले जीवें बोले यूनुस दिल दुखती

☆.....☆.....☆

३ अप्रैल २००६

(लंदन)

हस्ते रूह

.....☆.....

तुम से मिली जो ज़िन्दगी वो अभी तक जी नहीं
तुम से मिल कर आरज़ू मैंने किसी की भी की नहीं
तुम से मिला तो यूँ लगा जैसे खुदी को पा लिया
तुमसे खुदी की खू मिली, खू जिसमें खुद की भी नहीं
इश्क़ है गरदाबे खू, पैमानाए पहचान है
तुझसे शनासाई हुई तो खुद से शनासाई नहीं
इक हाल से हाले दीगर, बस हाल का ही है सफ़र
रफ़्तां यक हाले बेगुमां की जुस्तजू की भी नहीं
मंज़िल नज़ूले हाल की इक सूरते सराब है
साकिन क्यूँ रहूँ हाल पे क्या हस्ते रूह लपकी नहीं

☆.....☆.....☆

२००६

(लंदन)

साडा चिड़ियां दा चंबह

.....☆.....

तुसी जान हमारी ओ, गौहर असी जान तेरी होवे
मेरे दिल विच वी आओ गौहर, इश्क़े दी शाला ख़ैर होवे
क्यूँ दिसदा नयीं मेनूं गौहर, मैं अक्खां विच धूल पावां
दीवे बालो मुहब्बतां दे, कीवें न फ़ेर दीदार होवे
तरले पावां तू आजा गौहर, न हुन कोई दीद होवे
नयी ऐ दम दा वसा मेरे, इक दिन असीं टुर जाना
ज्ओंदे रहेंदेयां आ गौहर, जे मेरे नाल प्यार होवे

☆.....☆.....☆

(लंदन)

दुनिया

.....☆.....

वजूदे गौहर से लगती थी निराली दुनिया
दौरे ग़ैबी में बनी एक ख़याली दुनिया
जल्वाए हुस्ने गौहर से थी जमाली दुनिया
इश्क़े गौहर से बनी चाहने वाली दुनिया
इक जहां कुफ़्र का आबाद था जो ज़ेर हुआ
दौरे मेहदी में इश्क़े रियाज़ ने पा ली दुनिया
हम नशीं, हम ख़िरद, हम जिन्स, सब बेगाने थे
फिर तेरे अ़क्स ने रूहों से निकाली दुनिया
जो तेरी याद में बौलाए हुए फिरते थे
उन्ही के वास्ते इक और बसा ली दुनिया
वो जो अंदाज़े मुहब्बत से भी बेगाने थे
नक़्शे गौहर से तेरे इश्क़ में ढाली दुनिया
यही दुनिया जो तेरी याद से वाक़िफ़ भी न थी
अब तेरे दर पे खड़ी है सवाली दुनिया
हम जो जाते हैं तो आवाज़े फ़लक आती है
जा रहे हो तो हुई इश्क़ से ख़ाली दुनिया
हातिफ़ ग़ैब से ये सदा आती है
हमने इक और जहां में है बसा ली दुनिया
आ कि परवानाए दिल आज हुआ है वारिद
यूनुस अल्गौहर ने इक और बना ली दुनिया

☆.....☆.....☆

१६ फरवरी २००७
(लंदन)

हुस्ने लाज़वाल

.....☆.....

वो हुस्ने लाज़वाल हैं, हम इश्क़े बेमिसाल हैं
खूने जिगर से हम को कुछ दुश्मनी है यूनुस
रोते हैं धड़कनों में रोते हैं चाशे हालां
काबे से दुश्मनी है, अल्लाह से बैर है कुछ
इश्क़े गौहर ने हमको खूं ख़्वार सा बनाया
इश्क़े गौहर से बढ़ कर कुछ बंदगी नहीं है
सिजदा रूकू रवाना, चाशो निगाह बहाना
इंसानियत से आ़री, अल्लाह से बुग़ज़ रखना
सीखा है हम ने मरना कुछ ज़िंदगी से डरना
कल्माए रियाज़ क्या है? दिलबर की इक सदा है
माशूक़ की वफ़ा है, आशिक़ की इक अदा है
उनके लबों की लाली और ज़ुल्फों की ठंडी हवा है
दीवार पर लिखा हो तो मिट जाएगा किसी दिन
दिल पर लिखा है यारम कैसे मिटाएगा ज़माना
हम चुप हैं देखते है इसरार के ख़ज़ाने
क्यूँ तुम से कह दिया इसरार ए नाज़नीना
उफ़्तादे चाशे यारम इक़रारे दिलबर रियाज़म
हम खुद सनम यहां हैं वो खुद बलम वहां हैं
आजा अब कि गौहर मैं खुद से नहीं मिला हूँ
खुद से भी क्या हुआ मिलना, जब तू यहां नहीं है
हस्तम कि बाज़ गश्तम, रियाज़म वजूदे जानम
मन ज़ाहिरे रियाज़म तू रूह में बा आमम
यूनुस नहीं नहीं था गौहर गौहर ही गौहर
हर सिम्त है नज़ारा, देखो बा चश्मे गौहर

☆.....☆.....☆

५ मार्च २००५
(लंदन)

वो मुसकुरा रहे हैं

.....☆.....

वो मुसकुरा रहे हैं दिल को लुभा रहे हैं
तन्हाइयों में मुशकिल मेरी बढ़ा रहे है
पलकों को पलकें छूकर दीदार कर रहीं हैं
दिल चूम कर वो मेरा मुझ को सुला रहे हैं
जुल्फ़ों की हसीन छांव, लम्से गौहर का मरहम
इश्क़े गौहर की लोरी मुझ को सुना रहे हैं
इक रोज़ आए बैठे पहलू में मेरे दिलबर
पूछा कि मेरे हमदम क्यूँ रोए जा रहे हैं
पूछा ये मैंने, दिलबर! दूई का लुत्फ़ क्या हैं
कहने लगे कि रूठे दिल को मना रहे हैं
मैंने कहा कि दिलबर, दिल को रुलाया क्यूँ कर
बोले कि दर्दे इश्क़ हम तुम को सिखा रहे हैं
कहने लगे कि यूनुस, यूनुस नहीं रहा अब
मैंने कहा कि यूनुस को क्यूँ भुला रहे हैं
बरजस्तगी से बोले, तू खुद भुला मैं खुद को
खो जाएं खुद में ऐसे कि खुद को पा रहे हैं
पूछा कि दर्दो ग़म का इन्आ़म क्या मिलेगा
कहने लगे यही कि ग़म को भुला रहे हैं
दीदो शुनीद हो कर दिल की उमंग जागी
यूनुस चहक के बोला कब आप आ रहे हैं
कहने लगे कि दिल दिल आंसूं बहाएगा जब
खूने जिगर पुकारे तो समझो आ रहे हैं
मैंने कहा कि दिलबर दिल को निचोड़ लीजिए
खूने जिगर बहा दो पर कह दो आ रहे हैं

इक रोज़ फिर वो आए महरूख़ गुलाबे जानम
पलकों का लिया बोसा और चूमे जा रहे हैं
पूछा निशाने यूनुस तरसे है बे निशां को
बोले निशाने यूनुस खूं से मिटा रहे हैं
मन यक निशाने यारम बेकैफ़ हाले दर्मा
तू आरज़ूए जानम तुझ को बता रहे हैं
तू आशिक़ी में आख़िर मैं माशूक़ी में अव्वल
आख़िर मिटा के तुझ को अव्वल दिखा रहे हैं
तेरा नसीब मैं हूं मेरा सुराग़ है तू
दे सबक़ सब ही को जो हम पढ़ा रहे हैं
मैंने कहा मेरी जां मेरा सबक़ तू ही है
तेरी ही आरज़ू में सब तुझ को पा रहे हैं
फिर मुस्कुरा के उठे कहने लगे कि अच्छा
तू बैठ लिख ग़ज़ल ये अब हम तो जा रहे हैं
मैंने कहा कि रूकिए न जाइए खुदारा
कहने लगे कि छोड़ो कल फिर हम आ रहे हैं
यूनुस के पास क्या है दिलबर की कुछ अदाएं
कुछ लमहे, कुछ फ़साने जो लिखे जा रहे हैं

☆.....☆.....☆

१६ जनवरी २००४

(बैंकाक)

यादे गौहर

.....☆.....

यादे गौहर ने दी दिल पे दस्तक ..... खुश्बुए यार आई है दिल तक
वो शनासाई है दिल को उनसे ..... नज़र से दूर दिल में है अब तक
इक नज़र उसने देखा था मुझको ..... नज़र क़ायम हुई मेरे दिल तक
आश्क़ी इश्क़ बनने से ताबीर ..... फ़ासिला तय हो नज़रों से दिल तक
रंग लाएगी ये दिल नशीनी ..... हसरते यार बाक़ी है अब तक
जुल्फ़े गौहर है आग़ोशे चहरा ..... खुश्बूए जुल्फ़ फैली है दिल तक
खुदसे मिलना है दीदारे यारम .... सनम यार सनम हुआ दिलसे रूह तक
लम्से यारम सनम लम्से यारम ..... पहुँचा इदराक एहसासे दिल तक
उनकी आमद के हैं मुंतज़िर सब ..... पर बसा कौन गौहर के दिल तक
इंतज़ारे सबा कुछ नहीं है ..... दम न पहुँचे अगर हब्से दम तक
इश्क़ की खुशियां हैं बिखरती ..... कौन पहुँचे अब इन की रूह तक
मुनफ़रिद है फर्द अगरचे रूसवा ..... कौन देखे गौहर उस के दिल तक
जिस्म की बे सबाती गुमां है ..... है गुमां का सिरा तेरे दिल तक
रश्के दायम में क्यूँ मुबतिला है ..... नक्शे यारम हवेदा है दिल तक
ज़िन्दगी बीती जाती नहीं है ..... रूक गई है वो तेरे कदम तक
सांस थामे है आँचल गौहर का ..... उनके अबरू से जुल्फ़े कंवर तक
कोई आहट है मुझ को रूलाती ..... मैं कहां फंस गया इस ख़बर तक
उनको आता है यूनुस बहाना ..... रोज़े अव्वल से रोज़े हशर तक

☆.....☆.....☆

८ जनवरी २००४

(लंदन)

गौहर ने ठानी है

.....☆.....

ये गौहर ने ठानी है कि अपनी शान दिखानी है
बड़ा सितारा, चाँद पे सूरत अज़मत की ये निशनी है
रियाज़ का कलमा सूरज पे तस्वीर से आँखें चार करे
चुपके चुपके बात करे कि यह कैसी उरयानी है
हज्र अस्वद, मंदिर, मस्जिद, हर जा क़ब्ज़ा गौहर का
काबा हो या अर्शे इलाही गौहर की हुक्मरानी है
अपने दिल पे राज गौहर का, तस्वीरों का मेला है
हम गौहर के शैदाई हैं, गौहर दिलबर जानी है
सारे खुदाओं का खुदा है मेरा गौहर शाही
सर कटता है कट जाए पर हक़ की बात बतानी है
गौहर ने जल्दी आना है, राहें उनको तकती हैं
दीद की ख़ातिर ज़िन्दा हैं हम, वरना दुनिया फ़ानी है
गली गली और करिया करिया इश्क़े गौहर की बारिश है
हर कोई मैनोशी में मगन है, जल्वों की अरज़ानी है
यूनुस लोगों को कहता है इश्क़े गौहर में मस्त रहो
गौहर पर तन मन सब वारो दुनिया आनी जानी है

☆.....☆.....☆

२० अक्तूबर २००४
(लंदन)

मौजे नफ़्स

.....☆.....

यह क्या आज़ाब है कि क़ैद हूँ ख़ुद अपनी हस्ती में
सनम को भूल जाता हूँ मैं मौजे नफ़्सो मस्ती में
मेरे गौहर तू मुझको थाम कर रखिओ अंधेरे में
कहीं मैं गिर न जाउँ नफ़्स की जुलमतो मस्ती में
नहीं है आसरा कोई बजुज़ इक नक़्शे तू यारम
कहीं आबे मआ़सी आ न जाए दिल की कश्ती में
ना जाने किस गुनाह की तौबा में रोती हैं ये आँखें
मेरा तो हाल ये है जी रहा हूँ ख़ुद परस्ती में
सिला रहमी यूँ करता हूँ कि तू भी बख़्श दे मुझको
वगरना रहम की फ़ितरत नहीं थी मेरी हस्ती में
तूही रहमो करम फ़रमा दे अपने अ़ब्दे आ़जिज़ पर
वगरना जुलमतों की आंधियां चलती हैं बस्ती में
यूनुस इक हुरूफ़े मनाजात ही मक़बूल हो
कहीं रूसवा न हो जाए तू नफ़्से ख़ू परस्ती में

☆.....☆.....☆

२६ सितम्बर २००४

(लंदन। सुबह 06:49 पर)

Gohar Shahi is everywhere

Gohar Shahi is everywhere I see
Trust me and soon shall you see
The Moon, the Sun and the stars all shine
As Moon does, my heart does shine
As does RIAZ in His Palace dwell
He peeps through my soul as well
Man but can never love
Unless does fly his soul as a dove
Human does have faces, colours and cast
Love has no boundaries, its sphere is vast
Love knows no God, thus sends no Prophet
Love finds its place settles where does fit
Love sees no profit neither suffers a loss
Love is a servant and love is a boss
Love is a chime, which hourly does strike
Love sings the music which soul does like
Love is a rainbow that shines so bright
Shows human the way in the hateful night
Lo and behold. As Love does recall
Embrace ye Love and vow on its call
Younus does wander in the desert of hatred
Cling fast to the rope of Love in red

10.04.2004 (London)

How do I explain what do I think of you?

How do I explain what do I think of you?
I see you in my dream You run in my blood stream
I live on your smilen Look at me for a while
How do I explain what do I think of you?
You throb in my heart No wonder Lord Thou art
I feel your touch in my soul You are the destiny and my goal
How do I explain what do I think of you?
You are the apple of my eye
Your absence makes me sigh
In helplessness I cry To grab you I cry
How do I explain what do I think of you?
The world is so dark
So how whould I walk?
With you, I whould talk
You in heart, I would lock
How do I explain what do I think of you?
You are my Lord You are my God
You smile and you nod
Your absence is a sword

~~~~~~~

10.12.2004

Mehdi In The Moon, Messiah In The Moon

Mehdi In The Moon, Messiah In The Moon
He shines upon everyone, return very soon

He goes round and round, showering love
Rulling hearts and souls, Mehdi in the Moon

He travels through all regions, he blesses all nations
His mercy encompasses all, he holds no reservations

He loves all human, he blesses men and women
Mehdi In The Moon, Messiah In The Moon

14.07.2006

Halqa Jamal e Yaaram

O people of Moses! Lo and Behold, We are your destination
We have come to fulfil the promise that once we made
Halqa Jamal e Yaram……His Beauty embraces me
His Fragrance is my House
Me the sinner of love……..have mercy on me, O my Lord Riaz
O those who failed to observe loyalty (wafa)
Come and meet me as I am the trader of Loyalty
I grumble naught of the lack of Loyalty
As does under a great weight lay the stone of loyalty
I am the Spirit of the Temples and faith of the mosques
You hear me in the Flute of Krishna and observe me in the fire of Sinai
I am drunk with the Wine that fly off they EYES
My Faith travels on that path leading to your tresses
Night-long sighs are the weight of my love for you
Thy Beauty perches on my heart as does dwell the dew on flowers
I am still searching for the Sigh that turns into prayer
The Sigh that reaches your heart is about to die
I am the Shadow of Loyalty, I am the wealth of Loyalty
I am the cause in increase of faith
I am the friend whom you bow down in Sajda
I am the friend of whom you bow down before
Heart is the place of Love, Eyes are the passage to heart
The Continuation of tears carries on with every beath burnt with sadness
How could people know of me, O Younus
That I too belong to those who love GOHAR SHAHI, The king of all Kings

06.05.2005 (Sharjah)

हुस्न ए मुजस्सम

.....☆.....

ये जुल्फ़े गौहर और गुलाबी निगाहें
हैं सांसें ये बहकी शराबी फ़िज़ाएं
वो आरिज़ की लाली वो बिखरा तबस्सुम
वो पलकों का घेरा हमारी पनाहें
ये आग़ोशे गौहर ये बाहों का हल्क़ा
गले मिल रहीं हैं हमारी वफ़ाएं
वो रूख़सारे गौहर वो नज़रों के पहरे
क्यूँ याद आएं हम को हमारी ख़ताएं
वो हुस्ने मुजस्सम ये जल्वों की बारिश
ये मुशताक़ दिल और तुम्हारी अ़ताएं
ये लहराती जुल्फ़ें मुअ़त्तर मुअ़त्तर
कहीं हो न जाएं शराबी हवाएं
वो रूख़ पे शरारत वो तिरछी निगाहें
हमें मार देंगीं तुम्हारी अदाएं
बड़ी जान लेवा ये तेरी जुदाई
फ़िराक़ो हिजर और हमारी सदाएं
कभी तेरे दिलपे मचलतीं तो होंगीं
तड़पती सिसकती हमारी ये आहें
तेरा रूख़ हो दिल पर और बाहों के साए
भुला दें हमें सारे जहां की जफ़ाएं
ये दिल और धड़कन कहीं खो क्यूँ जाएं
उन्हें ढूंडतीं हैं तुम्हारी पनाहें
ये रो रो के कहती हैं यूनुस की आहें
हुई शाम अब तो गौहर आ भी जाएं

☆.....☆.....☆

१३ सितंबर २००३
(लंदन)

माशूक़ रूही रियाज़ दिल्बर

.....☆.....

यूनुस बसाने कसाने ब रफ़्तम

ज़हूर हुआ तेरा रफ़ता रफ़ता

समाया है शम्सो क़मर में गौहर शाही

रियाज़म नियाज़म बमशकूर हमलन

फ़ क़सरे रियाज़ नह्नू महलन

फ़ मअ़शूक़ अज़ली व हमली रियाज़म

रियाज़म रूही रियाज़म ब इस्मी ब जिस्मी

रियाज़म क़ल्बी व रियाज़म रूही

फ़ अरज़ी क़ल्बी वाला इसरार रूही

यूनुस बसाने कसाने ब रफ़्तम

ब रफ़्तम मुरक्कब मासमे ज़म

☆.....☆.....☆

२००६

(मराकश)

चश्मे राह

.....☆.....

यूनुस के भेद से वो खुद आगाह नहीं है
पस इतना जानता है कि गुमराह नहीं है
अंदाज़े गुफ़्तगू से ये एहसास हुआ है
कुछ कुछ ख़याले यार है हमराह नहीं है
उसके गुमान पर उसे जाने है अगर तू
तो हुस्ने ज़ने यार को समझा ही नहीं है
सौते रियाज़ साज़ है उस मुश्के ख़तन का
जिसकी नवाए यार का दिल चश्मे राह है
धड़कने दिल करती है तवाफ़ जिस मूरते इश्क़ का
उन ही हसीन लम्हों का ये दिल गवाह है
उस जुम्बिशे तकरार से रूह पाश पाश है
लम्से रियाज़ मचले है पलकों की राह है
रूह दामने रियाज़ में मशग़ूले इश्क़ है
अब रियाज़ को इस रूह से करना निबाह है
ये दिल तो जला आतिशे इश्क़े रियाज़ में
पर दिल के इर्द गिर्द की दुनिया तबाह है
असारे ज़ीस्त हैं न रमक़ ज़ीस्त की बाक़ी
सुलगे हुए उस दिल की ये इक तड़पी आह है
इस कारहाए इश्क़ का ईंधन वजूदे मन
आंचल में छुपी सिमटी है उनकी निगाह है
मन की मुराद क्या है ज़ने मन हमा अज़ ऊस्त
ईं हल्क़ा हाए जानोतन उन की पनाह है
यूनुस फ़रेबे इश्क़ पे अब ग़म न कीजिओ
दिलबर फ़रेबे राह से गौहर बराह है

☆.....☆.....☆

२ फरवरी २००४
(भोरबन पाकिस्तान)

लैलाई के फ़साने

.....☆.....

ज़िन्दगी बीत रही है तेरे ख़यालों में ..... कुछतो मिलने की तड़प है मेरे सवालों में
कुछतो जज़बात का इज़हार वबाले जां ..... कुछ समझबूझ नहीं तेरे चाहने वालों में
तो निहां क्या हुआ, एहसासे ज़ीस्त रूठ गया
और इज़ाफ़ा हुआ कुछ दर्द देने वालों में
ऐबजोई पे माइल है जहाने ग़ैबत यहां .... कोई तो हो जो रहे भरम रखने वालों में
शिद्दत मिट गई जो हुआ दर्द उरयां ..... मेरा शुमार नहीं ज़र्फ़ रखने वालों में
कोई निशां ना मिला राहे इश्क़ में मेरा .... मैं मुअ़म्मा ही रहा इश्क़ करने वालों में
कुछ मेरी आरज़ूएं ही मुझे रूलाती हैं ..... कुछ रूलाया है मुझे ज़ुल्म करने वालों ने
मैं तमाशाई हूँ जी भरके देख ली दुनिया ..... कोई तेरा नहीं है तेरे चाहने वालों में
तमाशाए करम चाहते हैं यकीं होने को ..... बेग़र्ज़ तुझ से मुहब्बत कहां दीवानों में
तेरा होना नहीं, न होने का सवाल अ़बस
जो नहीं था वो हुआ आज होने वालों में
ये राज़े इश्क़ नहीं ख़ूने रवां अश्के रवां .. काश कुछ पाए कोई अश्क के खज़ानों से
मुझे ज़बां न मिली ता वक़्त कि दिलबर न मिला
राज़ को राज़ रखा मैंने सुनने वालों में
कहावतें तो मिली इश्क़ की मजनूं न मिला ..... लैला नापैद है लैलाई के फ़सानों में
इश्क़ मिलता नहीं मजबूर किया जाता है
ज़ोर है जबर है पस इश्क़ की कमानों में
खुदी के भंवर में खोया न खुद न उन की ख़बर
ख़बर है यार की यारी है यार वालों से
क्या कोई जुर्मे ख़याले ग़मे यारां है क्या
क्या कोई कसर रही इनके सितम ढाने में

☆.....☆.....☆

२००५

(लंदन ता दुबई)

ज़िक्रे ख़ास

.....☆.....

ला इलाहा इल्ला रियाज़ यूनुस हामिले अलरियाज़

रा मीम रा

रा अल रा

मालिकुल इमलाक रा रियाज़ गौहर शाही मरहबा

शहनशाह इलाही गौहर शाही

इमादुल्लाह रा अल रा रियाज़

रब्बे अअ़ला रा रियाज़ की जुलफ़ों पे लाखों सुजूद

सरकार सरदार रा रियाज़ मरहबा बेकुम फ़िल महफ़िलना

रा सरकार रा सरदार रा रियाज़

☆.....☆.....☆

2 फरवरी 2007

(लंदन)

चेहरा जुलजलाल

.....☆.....

चेहरा जुलजलाल और मिज़ाज दिलबराना है
मेरे गौहर शाही तुझ को दिल में बसाना है

गौहर गौहर गौहर गौहर गौहर गौहर...या गौहर

तेरा ही इरादा है और तेरी ही तमन्ना है
तुझपे जीना मरना तेरा इश्क़ ही कमाना है

गौहर गौहर गौहर गौहर गौहर गौहर...या गौहर

आज तेरी ज़ात का चरचा है ज़माने में
रोज़ आना जाना है और ग़ैबत इक बहाना है

गौहर गौहर गौहर गौहर गौहर गौहर...या गौहर

इश्क़े इलाही दीने इलाही सब तेरी नज़र से है
लेकिन कुछ लोगों को रियाज़ुल जन्नाह भी ले जाना है

गौहर गौहर गौहर गौहर गौहर गौहर...या गौहर

☆.....☆.....☆

अशआर

.....☆.....

जुनूं की दस्तगीरी किससे हो गर ना हो उरयानी
गिरेबां चाक का हक़ हो गया मेरी गरदन पर

.....☆.....

जलाओ उसे जो हो जलने पे मायल ... भुलाओ उसे जो हो मिलने में मायल
तुम अपनी तड़प अपने सीने में रखो ... उसे बख़्श दो जोहो मचलने में घायल

.....☆.....

थोड़ा थोड़ा झूठ मिला ले अपनी सच्ची बातों में
वरना झूठे लोगों में तू कैसे उम्र गुज़ारेगा
शहर के चौराहे पर तुम ये आइना लेकर मत जाना
हर कोई अपना चेहरा देख के तुम को पत्थर मारेगा

.....☆.....

रात के पिछले पहर से कोई ..... जाने कब से जाग रहा है
आँखें बंद और हाथ दुआ में ..... मुझ को रब से मांग रहा है

.....☆.....

जिसे तेरी तवज्जोह में कमी महसूस होती है
उसे बेकार अपनी ज़िन्दगी महसूस होती है
क़यामत क्या बला होगी हमें तो बिन तेरे जानां
क़यामत ही क़यामत हर घड़ी महसूस होती है

.....☆.....

उतर आता है जब मेरे तसव्वुर में चहरा तेरा
मुझे चारों तरफ़ इक रोशनी महसूस होती है

.....☆.....

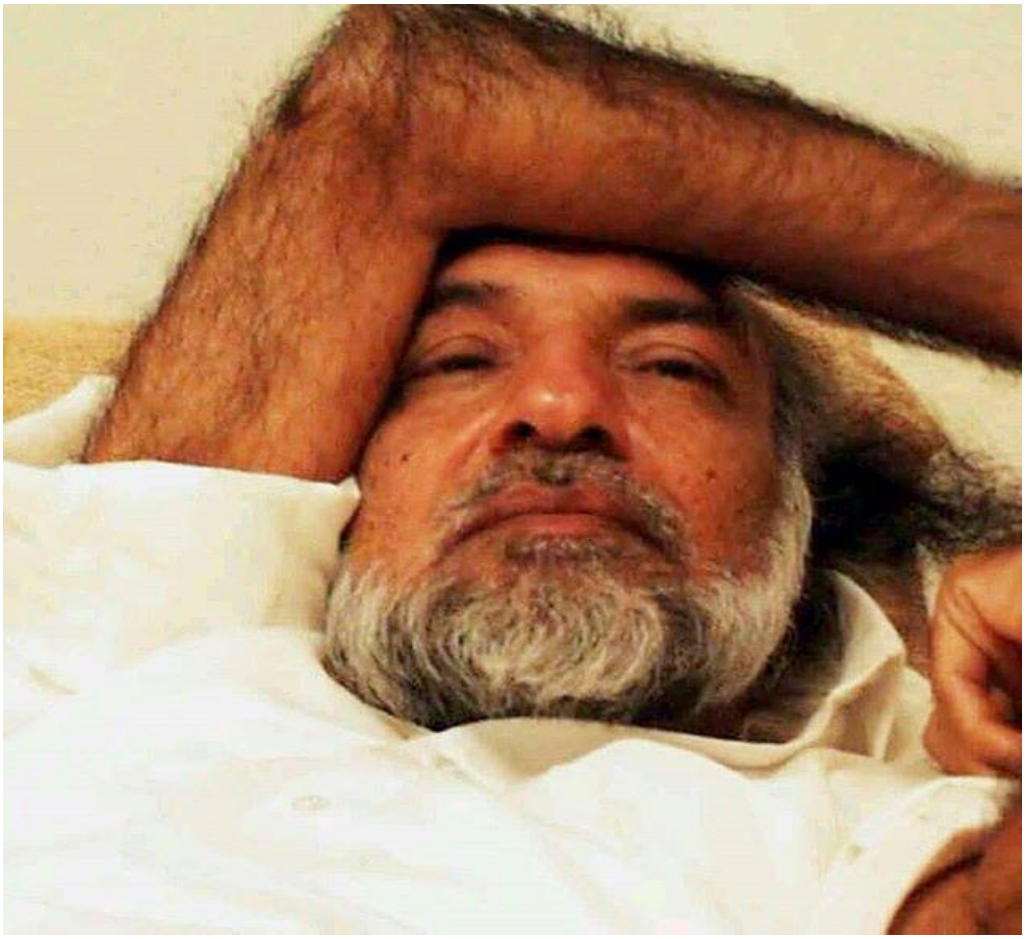

मौसमे इश्क़ की सुबह रहे और शामे ज़ीस्त ढल जाए
दिल गौहर शाही का तसव्वुर करे और जां निकल जाए

.....☆.....

मिला न कोई महरमे दिल, अंजानों को हाल सुनाना क्या
मर गए ज़िन्दगी में एक बार, अब जीना क्या मर जाना क्या

.....☆.....

जाओ दुनिया को बता दो कि मसीहा आया
मेहदी अल्मुंतज़िर गौहर इश्क़े अल्लाह लाया
ज़िम्मादारी है हिदायत की अपने कांधों पर
जल्द आएंगे गौहर शाही मुज़दा आया

.....☆.....

मौलाए कुल मेहदी अल्मुंतज़िर रा रियाज़ गौहर शाही मरहबा

☆......☆......☆

ईमान बिल मेहदी

मेरा रब तो फ़क़त रा रियाज़ गौहर शाही है। मेरे सिजदे वक़्फ़ हैं गौहर के क़दमों के लिए। मेरा आक़ा गौहर शाही जिस्म समेत वापिस आएगा। मज़ार का प्रोपेगंडा गुमराहकुन है। इमाम मेहदी गौहर शाही का मज़ार से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। गौहर शाही नज़र आएं या न आएं सिजदा सिर्फ़ गौहर शाही को होगा बस। हमारा रब, हमारा मालिक, सिर्फ़ गौहर शाही है। हमारा सिजदा सिर्फ़ गौहर शाही को होगा हमेशा। अबूदियत, सिजदा और शहनशाहियत के लाइक़ सिर्फ़ गौहर शाही है। गौहर की तौफ़ीक़ से हम गौहर को बग़ैर दलील रब्बुल अरबाब मानते हैं। हाँ हमारा रब रियाज़ हमें सब आफ़तों से बचाता है और बचाएगा। सिजदा सिर्फ़ गौहर शाही की नअ़लैन में ही होगा।

हम मुंतज़िर हैं आमदे गौहर के, मालिक गौहर शाही का वादा है कि अपनी शान से वापिस आएंगें। हम को चाँद सूरज की हाजत नहीं, गौहर का दिल में आना ही सब से बड़ा सबूत है। हमारे क़ल्बो रूह में रा रियाज़ आ चुका है हम हक़्क़े असील पा चुके हैं, अब हमें तेरी निशानियों की हाजत नहीं। हमारी रूह में जगमगाता रा रियाज़ तसदीक़े हक़्क़े असील के लिए काफ़ी है।

रा रियाज़ की रूहुना आयातुल अफ़ज़ल

ऐ मालिक गौहर शाही .... हम तुझी को पूजते हैं और तुझी को सिजदा करते हैं!

☆......☆......☆

१० फरवरी २००७

Mehdi
Foundation
International®